पंचम अध्याय

"विवेच्य उपन्यासों का शिल्पगत अध्ययन"

पंचम अध्याय

"विवेच्य उपन्यासों का शिल्पगत अध्ययन"

विषय प्रवेश :

मनुष्य प्राय: अपने जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु तक कार्यरत रहता है। साहित्यकार भी एक मनुष्य होने के कारण मनुष्य की हैसियत से ही अपना रचना-कार्य करता है। अपनी रचनाओं में भावों और विचारों का ही प्रदर्शन नहीं करता, उसे कलात्मक रूप भी देता है। डॉ. सुभाष दुरुगकर के शब्दों में - "रोचकता, आकर्षण और चिर प्रभाव के निर्माण के लिए साहित्यकार शिल्प की सृष्टि करता है।"[1] साहित्यकार का रचना-कार्य सफलता एवं शाश्वतता हुनर या कला पर ही निर्भर करता है।

शिल्प अंग्रेजी शब्द 'टेकनिक' का हिंदी अनुवाद है। 'भाषा शब्द कोश' में शिल्प का अर्थ इस प्रकार प्राप्त होता है - "हाथ से कोई वस्तु बनाकर प्रस्तुत करना, कारगिरी, दस्तकारी, कला संबंधी व्यवसाय या धंधा।"[2] अच्छी शिल्पविधा वह है जो सही वस्तु को, सही समय, सही परिप्रेक्ष्य में उचित ढंग से प्रस्तुत करें। शिल्प ही वह साधन है जिसके द्वारा उपन्यासकार अपने विजय की खोज, जाँच पड़ताल और विकास करता है। वस्तुत: शिल्प विधि का निर्धारण मुख्यत: उपन्यासकार की दृष्टि अथवा दृष्टिकोण पर ही अवलंबित होता है।

5.1 शिल्प से तात्पर्य :

शिल्प उपन्यासकार की रूचि, पाठक की माँग, समय की आवश्यकता में संतुलन स्थापित करने का माध्यम है। अपने विषय की अभिव्यक्ति के लिए आवश्यकतानुसार उपन्यासकार नई-नई शिल्पविधियों का प्रयोग करता है जो उसके भिन्न भिन्न कोनों से देखने की दृष्टि को स्पष्ट करने में सहायक होती है। पर्सी लुबक का यह कथन विचारणीय है - "उपन्यास कला की शिल्प विधि अथवा कारगिरी की

---

1. डॉ. सुभाष दुरुगकर - राही मासूम रजा का कथा साहित्य, पृष्ठ - 183
2. सं.डॉ. रामशंकर शुक्ल 'रसाल' - भाषा शब्द कोश, पृष्ठ - 1463

जटिलता का निर्धारण मूलत: कथाकार के दृष्टिकोण पर निर्भर है। कथाकार का कथा के साथ जो संबंध होता है वही आखिर में उपन्यास का शिल्प निर्धारण करता है।''[1] अत: शिल्प विधि का निर्धारण मुख्यत: उपन्यासकार की दृष्टि अथवा दृष्टिकोण पर ही अवलंबित होता है। शिल्प का विकास साहित्य के विविध अंगों के विकास के साथ-साथ हुआ है। शिल्प अर्थात् कृति के निर्माण का ढंग अथवा उन तत्त्वों का संयोजन जिनके उपयोग से कोई कृति जन्म लेती हो। उपन्यास जैसी सजीव विधा के शिल्पविधि में सदैव परिवर्तन होना स्वाभाविक है। शिल्प के अंतर्गत वस्तु संगठन योजना चरित्रांकन विधि, संवाद परिकल्पना, वातावरण नियोजन, विचार संचालन तथा भाषा और शैली तत्त्व नियोजित होते हैं। इस दृष्टि से शिल्प उपन्यास का अविभाज्य अंग है, जिसके द्वारा वह साहित्य के क्षेत्र में अपनी पहचान बना सकता है।

5.2 उपन्यास के तत्त्वों की दृष्टि से विवेच्य उपन्यासों का मूल्यांकन :

सुरेंद्र वर्मा के उपन्यास तत्त्वों की दृष्टि से एक नया प्रयोग है, जिसका शिल्पगत अध्ययन यहाँ प्रस्तुत है -

5.2.1 कथावस्तु -

उपन्यास के तत्त्वों के अंतर्गत कथावस्तु को प्रथम अनिवार्य तत्त्व के रूप में प्राय: सभी आलोचकों ने स्वीकार किया है। इसीलिए कथानक को उपन्यास का प्राण तत्त्व भी कहा जाता है। कथावस्तु के अंतर्गत वे समस्त घटनाएँ और सूत्र आ जाते हैं, जिनसे उपन्यास की रचना होती है। कथावस्तु, कथानक के अभाव में उपन्यास की रचना संभव नहीं होती। अत: कथावस्तु का उपन्यास में वही स्थान है जो शरीर में अस्थियों का। अब हम विवेच्य उपन्यासों के कथाशिल्प निम्नलिखित हैं -

5.2.1.1 'अंधेरे से परे' :-

'अंधेरे से परे' वर्मा जी का पहला उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास

---

1. Lubbk Purey - Croft of Fiction, Pg. - 251

आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है। जित्तन इस उपन्यास का नायक है। प्रस्तुत उपन्यास आज की मजबूर भागती-हांफती जिंदगियों के आस-पास का बहुआयामी कथानक है। 'अंधेरे से परे' के मूल में दिल्ली जैसे महानगरीय जीवन की भागदौड, पारिवारिक कलह, आर्थिक मजबूरी, अतृप्त काम वासना, पति-पत्नी के झगड़े में बच्चों का अकेलापन आदि स्थितियों का चित्रण सशक्त रूप में हुआ है।

उपन्यास में शुरू से लेकर अंत तक गुल्लू अपनी कहानी बताता जाता है। गुल्लू और जित्तन निराश, कुंठित विचारोंवाले युवा पात्र हैं। उपन्यास की पूरी कथावस्तु जित्तन के इर्द-गिर्द घूमती है। गुल्लू बाल्यावस्था से ही उपेक्षित एवं हीनता-बोध ग्रंथि से ग्रस्त है। इस हीनता ग्रंथि के कारण उसके जीवन में गहन निराशा व्याप्त है। इस निराशा से मुक्त होने के लिए वह अपने जीवन में उपयुक्त स्थितियों का निर्माण स्वयं करता है। गुल्लू की तरह जित्तन भी निराश दिखाई देता है। जित्तन को रिश्वत लेने के जुर्म में असिस्टेंट मैनेजर की नौकरी छूट जाती है। आर्थिक मजबूरी का सामना करते हुए बिंदो जित्तन को समझाने का प्रयास करती है लेकिन जित्तन मानसिक दृष्टि से बहुत कमजोर हो जाता है। दोनों की अपनी विरोधी मानसिकता के कारण दांपत्य संबंध में विरक्ति आती है। इसका परिणाम अबोध बच्चे पर होता है।

प्रस्तुत उपन्यास में बिंदो आज के बुद्धिजीवी नारी वर्ग का प्रतिनिधि पात्र है, जो अपने जीवन में विफल दांपत्य जीवन का बोध सहते-सहते इस जटिल स्थिति से उबार लेती है। बिंदो सोमू की पढ़ाई और परिवार की आर्थिक सहायता के लिए नौकरी करती है। आज महानगरीय जीवन में अक्सर यह दिखाई देता है। अगर माँ नौकरीपेशा हो तो बच्चे की परवरिश में कुछ कमियाँ नजर आती हैं। सोमू को भी अपने माँ-बाप का प्यार न मिलने के कारण अकेलापन का सामना करना पड़ता है। अकेलेपन को दूर करने के लिए बच्चे अक्सर पंछी, गुड़िया और जानवरों के साथ अपना अकेलापन बाँटते हैं। सोमू जुगनू नामक बिल्ली के साथ अपना अकेलापन कम करने के लिए अपनी मन की बात कहता है। उसके साथ मौज-मस्ती करता है। गुल्लू 'आकाशदीप' एडवर्टायजिंग कंपनी में काम करता है। इस उपन्यास की सभी

नारियाँ नौकरीपेशा हैं। ये नारियाँ अपने पति से यौन तुष्टि न होने के कारण पर पुरुष से संपर्क स्थापित करती हैं। इसी कारण विवाह जैसे पवित्र बंधन टूटते जा रहे हैं। इस उपन्यास के ज्यादातर पात्र अकेलेपन की समस्या से पीड़ित हैं।

इस तरह बदलते परिवेश में शिक्षित नारी के संबंधों का एक बनता-बिगड़ता संसार है। पुरुष इस संसार में अधिकाधिक भावनाहीन होता चला गया है। अंत में जित्तन घर छोड़कर चला जाता है। जित्तन एक कुंठित, निराश और संत्रास होने के कारण जीवन में सफल नहीं हो पाता, इसी कारण उसे जीवन असहाय लगने लगता है।

5.2.1.2 'मुझे चाँद चाहिए' :-

'मुझे चाँद चाहिए' वर्मा जी का दूसरा उपन्यास है। इसके मूल में स्त्री पराधीनता, स्त्री स्वातंत्र्य, स्त्री संघर्ष तथा स्त्री का अस्तित्व संपन्न रूप भी दिखाया है। साथ ही युवा अभिनेत्री वर्षा की संघर्ष-गाथा ही नहीं प्रेमकथा भी वर्णित है।

'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास में कलाकारों का महत्वाकांक्षाओं, कला के प्रति उनकी प्रतिबद्धताओं, अंतर्विरोधी व्यावसायिकता के कारण कला के अवमूल्यन और कला के चाँद की प्राप्ति हेतु किए गए संघर्षों में स्वयं को मिटा देने तक की आकांक्षा आदि को बड़े प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त किया गया है। उपन्यास की संपूर्ण कथा अभिनय के कलाकारों के जीवन पर आधारित है। इसमें सभी जिस चाँद को पाना चाहते हैं वह है कला का चाँद।

प्रस्तुत उपन्यास के लेखक सुरेंद्र वर्मा ने शाहजहाँपुर के अभाव-जर्जर, पुरातनपंथी ब्राह्मण परिवार में जन्मी वर्षा वशिष्ठ किस तरह पारिवारिक तथा सामाजिक समस्याओं का सामना करके अपने अस्तित्व को बनाए रखने की कोशिश करती है इसे चित्रित किया है। सिलबिल का पहला विरोध 'नाम परिवर्तन' को लेकर होता है। हाईस्कूल के फॉर्म में सिलबिल अपना नाम यशोदा शर्मा न लिखकर वर्षा वशिष्ठ लिखती है। अपनी प्राध्यापिका दिव्या की सहायता से वह कला से जुड़ती है।

पहले तो वह अपने अभावग्रस्त और त्रासदीपूर्ण जीवन से निकलने के लिए नाटक को अपना सबकुछ मानती है। कला के प्रति बढ़ती इच्छा, आकांक्षा के कारण परिवार की प्रतिकूल स्थितियों से निकालकर एन.एस.डी. तक पहुँचा देती है। डॉ. मोहम्मद अज़हर ढेरीवाला के शब्दों में – "रंगमंच के प्रारंभिक संघर्ष के बाद तो वह निरंतर सफलता के शिखरों को सर करती रही है। सफलता और केवल सफलता वर्षा के जीवन का ग्राफ यही सूचित करता है।"[1] वर्षा खूब पढ़ना, लिखना, रुपये कमाना चाहती है, लेकिन इन बातों में वर्षा के पिता की बिल्कुल रूचि नहीं होती। वर्षा नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा में अभिनय का ज्ञान प्राप्त करती है। इस दरम्यान वर्षा की हर्ष से पहचान हो जाती है और बाद में प्रेम भी। अभिनय के चाँद के साथ-साथ एक और चाँद जुड़ जाता है – हर्ष। हर्ष को सिर्फ अभिनय की कला का चाँद चाहिए। हर्ष और वर्षा एक-दूसरे के सुख-दु:ख बाँटकर खुश थे। वर्षा अथक परिश्रमों, प्रयत्नों के बलबूते पर बॉलीवूड और हॉलीवूड की 'स्टार' बन जाती है। काफी रुपये कमाने के बाद अपने भाई-बहन और परिवारवालों को आर्थिक दृष्टि से बहुत मदद करती है। वर्षा को एक के बाद एक नए-नए फिल्मों के लिए ऑफर मिलते हैं। हर्ष रंजना द्वारा निर्मित फिल्म 'मुक्ति' पूरी होने के बाद शादी करना चाहता है लेकिन दुर्भाग्यवश 'मुक्ति' पूरी नहीं हो पाती और हर्ष का मोहभंग होता है। हर्ष अपना संतुलन खो बैठता है, वह पहले से भी ज्यादा नशा करता है और जीवन से पलायन कर आत्महत्या करता है। हर्ष और वर्षा दोनों ही चाँदकांक्षी हैं लेकिन दोनों एक-एक स्तर पर असंभव के संघानी बनते हैं। अभिनय के चाँद को न पाकर हर्ष एवं हर्षप्रेम के चाँद को न पाकर वर्षा बहुत दु:खी दिखायी देती है। जब कि आज का यथार्थ यह है कि आज के उपयोगितावादी युग में किसी भी वस्तु अथवा कला का मूल्यांकन उसकी उपयोगिता के आधार पर किया जाता है। उसकी मूल्यवत्ता को नहीं देखा जाता।

हर्ष की मृत्यु के बाद वर्षा के दिल को काफी ठेंस पहुँचती है – "मेरे वास्ते चंद्रमा हमेशा के लिए बुझ गया है।"[2] अत: स्पष्ट है कि हर्षरुपी चाँद बूझ गया है लेकिन वह इस हादसे से सँभल जाती है और हर्ष के बच्चे को जन्म देकर उसकी

---

1. डॉ. मोहम्मद अज़हर ढेरीवाला – आधुनिक हिंदी उपन्यासों में नारी के विविध रूपों का चित्रण, पृष्ठ – 187
2. सुरेंद्र वर्मा – मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ – 547

परवरिश कर अपनी जिंदगी जीने लगती है। कुछ दिनों बाद सिद्धार्थ वर्षा के सामने शादी के लिए प्रस्ताव रखता है। तब दिव्या भी वर्षा को दुल्हन के रूप में देखना चाहती है। दिव्या को उत्तर के रूप में वर्षा कहती है - 'कोई इच्छा अधूरी रह जाए, तो जिंदगी में आस्था बनी रहती है।' वर्षा पुन:श्च शादी करना चाहती है। इससे स्पष्ट होता है कि महत्त्वाकांक्षी वर्षा वशिष्ठ के माध्यम से कस्बों, छोटे शहरों और वहाँ के मध्यवर्गीय परिवारों में आए बदलाव को रेखांकित किया गया है। अब युवतियाँ जागरुक हैं। उनमें अस्तित्व-बोध की सजगता आयी है। विवाह उनके जीवन की मंजिल नहीं रही। पारिवारिक हिंसा का विरोध करती हुई वर्षा अपने अस्तित्व के लिए, मेधा व प्रतिभा के विकास के लिए संघर्ष करती है। उसके निश्चय को कोई तोड़-मरोड़ नहीं सकता। वह न किसी दुहाजू से विवाह करने को तैयार होती है। पुरुषसत्ताक समाज के सुर में सुर मिलाकर माँ-बहन को असफलता ही मिलती है।

अत: कहना सही होगा कि लेखक ने 'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास समाज में अकेली नारियों की जीवन स्थितियों को उजागर करने वाली एक सशक्त रचना है। अकेली कामकाजी नारियाँ जीवन को अपने अनुकूल बनाने के लिए आज सामाजिक मान्यताओं, नैतिक रुढ़ियों, पारिवारिक बंधनों की पुनर्व्याख्या करती हुई दिखाई देती है। आज के युग का सबसे ज्वलंत एवं संवेदनशील प्रश्न उठाया है और इसे यथार्थ की अधिकतम संभावनाओं के बीच पूरी सतर्कता के साथ प्रस्तुत भी किया है।

5.2.1.3 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' :-

'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' वर्मा जी का तीसरा उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक सुरेंद्र वर्मा ने सुरक्षा और समृद्धि का सपना सँजोए शिक्षित नील और भोला जैसे युवक किस तरह पैसे कमाकर अमीर बनना चाहते हैं इस पर प्रकाश डाला है।

दिल्ली के उच्चशिक्षित युवक नील और मथुरा के अल्पशिक्षित युवक भोला बेकारी से त्रस्त होकर मुंबई महानगर में रोजी-रोटी कमाने के लिए चले जाते हैं।

लक्ष्य सिर्फ इतना था कि दो साल में पर्याप्त धन इकट्ठा करना। मुंबई महानगर में भोला को अंडरवर्ल्ड पनाह देता है तो नील मिसेज दस्तूर का शोध सहायक बनता है। अंडरवर्ल्ड भोला पर विश्वास बढ़ाता जाता है और भोला तरक्की करता जाता है। वह खूब रुपये कमाता है। तो दूसरी ओर नील पुरुष-वेश्या की सहायता से महानगर की धनाढ्य, पूँजीपति औरतें, जो अधेड़ उम्र की हैं, अपने पति से यौन अतृप्ति के कारण घायल बनकर पुरुष-वेश्या के माध्यम से यौन-तृप्ति का मार्ग तलाशती हैं। आज नारी-वेश्या की तरह पुरुष-वेश्या का निर्माण हो रहा है।

नील पुरुष वेश्या बनकर भरपूर रुपये कमाना चाहता है। इसके प्रचार के लिए नील 'टाइम्स ऑफ इंडिया' में अपना विज्ञापन देता है - "कुशाग्र बुद्धि, संभाषण कुशल, सजीले युवक को युवती मित्र चाहिए। जिंदगी को बर्दाश्त के लायक बनाना हो तो आज ही संपर्क करें।"[1] अतः नील ऐसे स्त्रियों के शरीर की प्यास बुझाने लगा जो अपनी जीवन शैली को लेकर आश्वस्त हैं। इस मार्ग का अवलंब कर नील फ्लैट, टेलिफोन, कार, विदेशी प्रसाधन आदि सुविधाओं से संपन्न बनता है। कुमुद से शुरु हुई यात्रा ब्लॉसम, यास्मीन, कुंतल, स्टेला, सौदामिनी, शिल्पा, करुणा, उर्वशी, पारुल तक जाती है। सोमपुरिया सेठ की बेटी, जयंत की पत्नी पारुल नील से प्रेम कर गर्भवती बन जाती हैं लेकिन नील नैन से शादी करना चाहता है, यह बात पारुल का भाई नवीन सह नहीं पाता। अतः वह गुंडों द्वारा नील को बहुत पीटता है। नील भोला के जरिए माफिया तक जाता है तो माफिया भी बड़ी रकम लेकर नील की हत्या कर देते हैं। तब भोला भी हतप्रभ एवं सुन्न हो जाता है। साँस रोककर पढ़ी जानेवाली इस कथा में सफेदपोशी युवक अपराधी और माफिया दोनों हैं। अतः दोनों जिंदादिल युवक अमीर बनने के लिए बंबई गए थे लेकिन वे मुर्दा बनकर रह गए।

5.2.2 पात्र या चरित्र-चित्रण -

उपन्यास के मुख्य तत्त्वों में पात्र या चरित्र-चित्रण को महत्त्वपूर्ण तत्त्व माना जाता है। वस्तुतः पात्र लेखक की काल्पनिक तथा यथार्थ की उपज होते हैं। कथानक के पश्चात् पात्र या चरित्र-चित्रण का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। डॉ.

---

1. सुरेंद्र वर्मा - दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता, पृष्ठ - 102

प्रतापनारायण टंडन के शब्दों में – ''वास्तव में उपन्यास का मूल विषय मनुष्य और उसका जीवन होता है। पात्र या चरित्र–चित्रण के माध्यम से उपन्यासकार इस जीवन के विविध रूपों को उपस्थित करता है।''[1] अत: इस तत्त्व का महत्त्व उपन्यास में अधिक होता है। पात्रों का अपना जीवन है, जीवन में संघर्ष है और उस संघर्ष के बीच प्रस्फुटित होने वाला उसका व्यक्तित्व है। इससे पात्रों का अंतरिक और बाह्य व्यक्तित्व झलकता है। डॉ. मुक्ता नायडू सही लिखती हैं – ''उसके क्रिया–कलाप, सबलता एवं निर्बलता, आशा, आकांक्षा आदि में अपने जीवन की झलक पाकर उससे पाठक तादात्म्य स्थापित कर लेता है।''[2] इससे स्पष्ट होता है कि पाठक उपन्यास के पात्रों से इतने जुड़ जाते हैं कि उसकी जगह अपने को पाते हैं। उपन्यास की चरित्र–चित्रण की दृष्टि से पात्रों के मुख्य दो भेद होते हैं – प्रधान पात्र तथा गौण पात्र। प्रधान पात्रों में नायक और नायिका दोनों हैं। गौण पात्रों का सिर्फ नामोल्लेख किया गया है। अत: यहाँ सुरेंद्र वर्मा के आलोच्य उपन्यासों के चरित्र–सृष्टि का क्रमश: मूल्यांकन प्रस्तुत है –

5.2.2.1 'अंधेरे से परे' :–

सुरेंद्र वर्मा के 'अंधेरे से परे' उपन्यास में पात्रों की चरित्र–सृष्टि का चित्रण कलात्मक रूप में मिलता है। उनका विवेचन–विश्लेषण निम्नांकित है –

5.2.2.1–1 प्रधान पात्र

उपन्यास में आदि से अंत तक मौजूद रहकर जो पात्र कथावस्तु को एक नया मोड़ देता है, पाठक के दिल में अपनी जगह बना लेता है उन्हें प्रधान पात्र कहा जाता है। सुरेंद्र वर्मा के 'अंधेरे से परे' उपन्यास में प्रधान पात्र के रूप में 'जित्तन' का चरित्र है, जिसका चरित्र इस प्रकार है –

(1) जित्तन

प्रस्तुत उपन्यास में अनेक पात्र हैं, लेकिन उपन्यास की पूरी कथावस्तु जित्तन के इर्द–गिर्द घूमती है। उसका जीवन अनेक विवशताओं, कुंठाओं, आर्थिक विपन्नता से भरा हुआ है। वह असिस्टेंट मैनेजरी की नौकरी करता था। रिश्वत लेने

---

1. डॉ. प्रतापनारायण टंडन – हिंदी उपन्यास कला, पृष्ठ – 163
2. डॉ. मुक्ता नायडू – इलाचंद जोशी का साहित्य शिल्प एवं संवेदना, पृष्ठ – 156

के जुर्म में सस्पेंड हुआ है । इसी कारण वह मानसिक दुर्बलता से ग्रस्त हो जाता है। अंत तक वह एक त्रिकोण में फँसा रहता है। स्थितियों और मन:स्थितियों का यह टकराव उसे तोड़-तोड़ कर कई हिस्सों में बाँट देता है। जित्तन अपना साहस ही खो बैठता है।

जित्तन स्वाभिमानी युवक के रूप में पाठक के सामने उपस्थित होता है। अपनी पत्नी और परिवार के प्रति अपना दायित्व निभा न पाने के कारण सास की बातें उसके मन:स्थल को काफी ठेस पहुँचाती हैं। इन स्थितियों से छुटकारा पाने के लिए वह मित्र मुकुंद के घर जाता है। जित्तन को यह भी आशा है कि रिश्वत के मामले में कोर्ट का फैसला अपनी ओर से होगा। इन्हीं विचारों में डूबे रहने के कारण वह किसी की भावनाओं को भी नहीं समझ पाता है। जीवन में पत्नी के प्रेम का अभाव रहने के बोध और हमेशा स्वयं को खोये जाने के दर्द के अहसास से अकेलापन महसूस करता है। पति-पत्नी का यह वैमनस्य बढ़ता जाता है।

जित्तन का स्वभाव शांत और सीमित आवश्यकताओं से बँधा है। जित्तन बच्चे की सभी इच्छाएँ पूरी करने की कोशिश करता है, इसलिए वह उनका प्यार पाने में सफल भी हो जाता है किंतु पत्नी की इच्छा पूरी नहीं कर पाता है। उसे अपनी पत्नी के पर पुरुष आकर्षण से दु:ख होता है। अंतत: वह चेतना जागृति के कारण फिर से नौकरी करने के लिए चला जाता है। जित्तन पाठकों का मन जीतने में फिर एक बार सफल हो जाता है।

(2) गुल्लू

गुल्लू 'अंधेरे से परे' उपन्यास का दूसरा प्रमुख पुरुष पात्र है। वह 'आकाशदीप' एडवर्टायजिंग कंपनी में टाइपराइटर की नौकरी करता है। गुल्लू कुंठित विचारोंवाला युवक है। उसकी जीवन की ओर देखने की दृष्टि निराशाजनक है। गुल्लू के कुंठित विचार इस तरह है – "सुबह जब नींद खुली, तो रोजाना की तरह सात के बजाय आठ बज चुके थे। पल भर संतोष हुआ कि दिनचर्या में एक घंटा काटने का संकट अपने-आप मिट गया। अगर किसी तरह हर दिन ऐसा होता रहे, तो कितना अच्छा हो।"[1] गुल्लू अनेक नारियों के प्रति आकर्षित होता है। मधु, नलिनी दोनों

---

1. सुरेंद्र वर्मा – अंधेरे से परे, पृष्ठ – 23

के काफी निकट आ जाता है। इतना ही नहीं वह उनकी यौन अतृप्ति को तृप्त कर देता है। वह एक कुंठित विचारों का युवक है फिर भी कर्तव्यनिष्ठ एवं दृढ़ संकल्प विचारों वाला सुशिक्षित युवक है। लेखक ने गुल्लू का चित्रण करने में भी कुशलता प्राप्त की है।

(3) बिंदो

बिंदो प्रस्तुत उपन्यास की प्रधान नारी पात्र है। बिंदो एक्सपोर्ट सेक्शन में नौकरी करती है। जित्तन की पत्नी के रूप में कभी वह स्वयं को खुश नहीं पाती। परिस्थितियों से मजबूर होकर पति को लेकर मायके के घर चली जाती है। वह अपनी गृहस्थी बसाने का प्रयास करती है लेकिन अर्थाभाव के कारण उसके सपने पूरे नहीं हो पाते। बिंदो अपने पति को एक बड़े ऑफिसर के रूप में देखना चाहती है किंतु असफलता मिलने के कारण पति से बहुत नाराज हो जाती है। बिंदो नौकरीपेशा नारी है। लेखक ने बिंदो के माध्यम से नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व को अनेक रुपों में निरुपित करने का प्रयत्न किया है। वह अपने जीवन में पति के अलावा मित्रों का चयन करने में भी पूर्ण स्वतंत्र रहना चाहती है। मि. चड्ढा के साथ अवैध संबंध रखती है। बिंदो गुल्लू को अवैध संबंधों के बारे में कहती है - "मैं कुछ नहीं कर सकती। मेरे बस में कुछ नहीं रहा। उसने हताशा से हथेलिया फैलाई, मैं नहीं चाहती थी कि कुछ ऐसा हो, पर अब मैं बिल्कुल विवश हूँ।"[1] बिंदो उत्तरदायित्वहीन नारी है। वह बच्चे के प्रति माँ की भूमिका निभा नहीं पाती। बिंदो अपनी इच्छानुसार जीना चाहती है। लेखक ने बिंदो के चरित्र द्वारा यह स्पष्ट किया है कि आज के सामाजिक परिवेश में व्यक्ति के स्वतंत्र निर्णय का महत्त्व बढ़ गया है।

5.2.2.1-2 गौण पात्र

प्रस्तुत उपन्यास के गौण पात्रों में जित्तन और बिंदो का बेटा सोमू, मधु, रोहित, नीरु, मिसेज बत्रा, मुकुंद, चित्रा, ममा, लतिका, शालू, नलिनी, मिसेज माथुर, बिनी, यास्मीन, मैरी, माया - रोहित की बहन, डॉ. चड्ढा और अमित आदि

---

1. सुरेंद्र वर्मा - अंधेरे से परे, पृष्ठ - 132

पात्रों का चरित्र उभर कर सामने आया है। ये सभी पात्र उपन्यास की कथा के संयोजन में सहायक बन चुके हैं। इन सभी पात्रों के चरित्र-चित्रण की भी अपनी-अपनी विशेषता है। ये सारे पात्र शिक्षित और नौकरीपेशा हैं। अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए स्त्री पात्र और पुरुष पात्र अवैध संबंध रखते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। नारी पात्र उत्तरदायित्वहीन एवं खुदगर्ज हैं। ये सारे तथ्य इन पात्रों के चरित्र-चित्रण को समझने के लिए सहायक हैं।

5.2.2.2 'मुझे चाँद चाहिए' :-

'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास में पात्रों की भरमार है लेकिन पात्रों को प्रधान पात्र और गौण पात्र के रूप में विभाजित कर उनका विवेचन-विश्लेषण यहाँ प्रस्तुत किया है -

5.2.2.2-1 प्रधान पात्र

'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास के प्रमुख पात्रों में वर्षा, दिव्या कत्याल और हर्ष का समावेश होता है। इन तीन प्रमुख पात्रों के चरित्र-चित्रण का संक्षिप्त विवेचन-विश्लेषण इस तरह है -

(1) वर्षा

'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास में 'वर्षा' आधुनिक विचारों का परिचय देनेवाली नायिका है। वर्षा वशिष्ठ मिश्रीलाल डिग्री कॉलेज में बी.ए. की कक्षा में पढ़नेवाली एक कठोर ब्राह्मण की बेटी है। उनके साहसी, महत्त्वाकांक्षी और संवेदनशील, सहनशील तथा शक्तिमान आदि गुण इस उपन्यास में उभर कर पाठकों के सामने आते हैं। वर्षा रूढ़ि-परंपराओं का त्याग कर नाटक और फिल्म क्षेत्र में पदार्पण करती है। उपन्यास की नायिका वर्षा बुद्धिजीवी वर्ग की आत्मनिर्भर नारी है जो जीवन को अपने ढंग से जीना चाहती है। श्याम कश्यप वर्षा के चरित्रों को स्पष्ट करते हुए कहते हैं - "वर्षा अपने सामाजिक मूल और तद्जनित जीवन-दर्शन के साथ ही अपने चरित्र की नमनीयता और संतुलन से कला मार्ग और जीवन संघर्षों की सारी बाधाओं को लांघकर

कलात्मक शिखरों और सफलता की बुलंदियों के 'चाँद' छू लेती है।''[1] जीवन में स्वच्छंदता, उन्मुक्तता एवं खुलापन उसके लिए सहज तत्त्व हैं। उसके पास एकाकी जीवन जीने का मनोबल, धैर्य एवं संयम है। उसके पास अपने स्वतंत्र जीवन को स्थापित करने का सामर्थ्य है। वर्षा पिता, भाई और माँ की असहमति और विरोध के बावजूद अभिनेत्री बनने के लिए राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में प्रवेश के लिए दिल्ली आ जाती है। फिर दिल्ली के रंगमंच पर सफलता पाने के बाद वह मुंबई जाती है और फिल्मों की एक सफल और लोकप्रिय अभिनेत्री बनती है। जीवन की तरह अपनी राह खुद चुनती है। उनके वंश में सात पीढ़ियों में काम करनेवाली वह पहली कन्या है। वर्षा के पिताजी परंपरावादी है। डॉ. शशिकला त्रिपाठी सही लिखती हैं – ''ऐसी दुनिया में वर्षा वशिष्ठ जैसी छोटे शहर और निम्नमध्यवर्गीय रुढ़िवादी परिवार की लड़की का श्रेष्ठ अभिनेत्री के रूप में उच्च शिखर पर पहुँच जाना एक सुखद संयोग है।''[2] अत: स्पष्ट है कि वर्षा का संघर्ष और सफलता 'नारी–मुक्ति' का सफल सफरनामा है।

वर्षा की चारित्रिक विशेषताएँ कुछ इस प्रकार हैं – कैरियरनिष्ठ, विद्रोही, स्वच्छंदी, संघर्षशील, आधुनिक, स्वतंत्र अस्तित्ववादी, विवाहपूर्व मातृत्व की चाह रखनेवाली, अधिकार के प्रति सजग, सचेत तथा चेतित आदि गुण–विशेष देखने को मिलते हैं। वर्षा कला के चाँद की प्राप्ति हेतु किए गए संघर्षों में स्वयं को मिटा देने तक की उसकी आकांक्षा प्रबल दिखाई देती है। श्याम कश्यप जी के अनुसार – ''वर्षा के चरित्र की दो सबसे बड़ी विशेषताएँ हैं, उसकी दृढ़ता और संतुलित नमनीयता।''[3] उसके अनुभव में जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए स्त्री को 'स्व' का त्याग करना होता है। इसका परिणाम यह निकला कि वह सिर्फ वर्तमान में जीने लगी, अतीत को भूल, भविष्य की चिंता को छोड़ वर्तमान में जीना वर्षा ने अपना लक्ष्य बना लिया है। वर्षा की दृष्टि प्रेम और सेक्स के विषय में एकदम खुली हुई है। विवाहपूर्व मातृत्व का स्वीकार कर बच्चे को जन्म देने का अहम् फैसला कर लेती है। वर्षा के साहस की यह प्रतिमूर्ति अनजाने में ही पाठकों के हृदय में एक प्रतीक चित्र बनकर उभर आती है। लेखक वर्षा के माध्यम से अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए पूरी तरह सफल हुए हैं।

---

1. सं. गोपाल राय – समीक्षा, जुलाई-सितंबर – 1994, पृष्ठ – 8
2. डॉ. शशिकला त्रिपाठी – उत्तरशती के उपन्यासों में स्त्री, पृष्ठ – 57
3. सं. गोपाल राय – समीक्षा, जुलाई-सितंबर, 1994, पृष्ठ – 8

(2) मिस दिव्या कत्याल

दिव्या एक साहसी नारी पात्र है। मिस दिव्या कत्याल मिश्रीलाल डिग्री कॉलेज की प्राध्यापिका है, जो अंग्रेजी पढ़ाती है। वह छात्रावास की वॉर्डन भी है। वह कॉलेज की अकेली प्राध्यापिका थी जो पढ़ाते समय हाथों में नोटस् की कॉपी नहीं रखती थी। डॉ. क्षितिज धुमाळ के शब्दों में – ''उसने मिश्रीलाल डिग्री कॉलेज में भावपक्ष और कलापक्ष दोनों दृष्टियों से नया स्वर्णिम अध्याय जोड़ा था।''[1] छात्र-जगत् में उसे सम्मान मिलता था। दिव्या वर्षा को नाट्यक्षेत्र में पदार्पण करने के लिए प्रोत्साहित करती है। मिस कत्याल वर्षा को समझाते हुए कहती है – ''सबसे पहले मैं आपसे माफी माँगती हूँ कि मैं आपके घरेलू मामले में हस्तक्षेप करने की धृष्टता कर रही हूँ। वर्षा अगर आपकी बेटी है तो मेरी भी छात्रा है।''[2] प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता है कि मिस दिव्या कत्याल का यह कथन वर्षा के परंपरावादी पिताजी का मत परिवर्तन करता है। साथ ही वर्षा के भवितव्य के लिए भी अच्छी बात बता देता है। मिस कत्याल छात्रप्रिय प्राध्यापिका है और प्रगतिशील विचारों की नारी भी। प्रेम में प्रशांत नामक युवक से धोखा खाती है। दिव्या अपने प्रेम, आस्था और चेतना को अलग-अलग स्थानों पर उठी हुई समस्या को पूरी तरह सुलझाने में सफल हो जाती है।

(3) हर्ष

हर्ष 'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास का नायक है। हर्ष कॉन्वेंट में शिक्षित एक अत्याधुनिक और संपन्न आई.ए.एस. परिवार का इकलौता बेटा है। वह भी अभिनय के चाँद को पाना चाहता है। भौतिक संभावनाओं की अपेक्षा उसे केवल अभिनय का चाँद चाहिए। वह अंग्रेजी में एम्.ए. की पढ़ाई अधूरी छोड़ और परिवार से मिलनेवाली सारी सुख-सुविधाओं को छोड़कर अभिनय के चाँद के लिए एन.एस.डी. आता है। अपनी प्रतिभा और लगन से वह कुछ हद तक चाँद को पा भी लेता है।

कालिगुला और उसके चरित्र को निभानेवाला हर्षवर्धन है। एन.एस.डी. के डायरेक्टर डॉ. अटल जी को हर्ष का रोल निभाने का थ्रस्ट ऑलीवियर की याद

---

1. डॉ. क्षितिज धुमाळ - बीसवीं सदी के अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों का प्रवृत्तिमूलक अनुशीलन, पृष्ठ - 201
2. सुरेंद्र वर्मा - मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ - 34

दिलाता है। श्याम कश्यप की दृष्टि से – ''हर्षवर्धन का चरित्र अत्यंत जटिल और पेचीदा चरित्र है।''[1] हर्ष बेहद आकर्षक व्यक्तित्ववाला और अपनी कला का सर्वश्रेष्ठ अभिनेता है। हर्ष की 'मुक्ति' फिल्म बन नहीं पाती है इसी कारण वह ड्रग्ज का ओवरडोज लेकर वर्सोवा के समुद्र तट पर आत्महत्या कर देता है। स्वयं लेखक के शब्दों में – ''किसी भी दृष्टि से देखो, हर्ष को आकाश पर होना चाहिए था। पर वह चौपाल के धूल भरे फर्श पर सूखी विष्ठा के बीच पड़ा था।''[2] प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता है कि जीवन में यश की अपेक्षा सहने की क्षमता, कर्तव्यबोध और उत्तरदायित्व एवं विश्वास की आवश्यकता होती है। इस प्रकार हर्ष एक नायक के रूप में इस उपन्यास में सामने आता है।

5.2.2.2–2 गौण पात्र

इसमें वर्षा के पिताजी किशनलाल शर्मा, बहन गायत्री, भाई महादेव, छोटा भाई किशोर, मिश्रीलाल डिग्री कॉलेज का छात्र कमलेश, दिव्या का प्रेमी प्रशांत, वर्षा का पहला चुंबन लेने वाला लखनऊ का युवक मिट्ठू, हर्ष की बहन सुजाता, प्राचार्य सिंहल की पत्नी मिसेज सिंहल, चतुर्भुज की दूसरी विवाहित पत्नी अनुपमा, प्रख्यात अभिनेत्री चारुश्री, फिल्म डायरेक्टर सिद्धार्थ, मुक्ति की फिल्म निर्माती रंजना, फिल्म अभिनेत्री जैनेट, वर्षा की छोटी बहन झल्ली, वर्षा की दायी झुमकी, वर्षा का अवैध बेटा हेमंत आदि पात्रों का बाहुल्य कमाल का है। सभी पात्र अपनी अलग पहचान बनाने में माहिर हैं।

इस उपन्यास के अधिकतर पात्र अभिनय क्षेत्र से जुड़े हुए हैं। साथ ही यौन संबंध में आधुनिकता के दर्शन, पति–पत्नी में अनबन के कारण विवाह–विच्छेद, बिना विवाह मातृत्व को स्वीकारना, फ्री–लव, फ्री–सेक्स, लेस्बियन संबंध, अवैध यौन संबंध, नशापान करना, अकेलेपन का अहसास आदि सारे तथ्य इन गौण पात्रों के चरित्र–चित्रण में मिलते हैं।

5.2.2.3 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' :–

प्रस्तुत उपन्यास में चरित्र–चित्रण का निर्वाह अच्छी तरह से हुआ है।

---

1. सं. गोपाल राय – समीक्षा, जुलाई–सितंबर–1994, पृष्ठ – 8
2. सुरेंद्र वर्मा – मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ – 46

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से इन पात्रों को प्रधान पात्र और गौण पात्र आदि रूप में विभाजित किया है, जिनका विश्लेषण निम्नांकित है -

5.2.2.3-1 प्रधान पात्र

उपन्यास में आदि से लेकर अंत तक जो पात्र मौजूद रहता है, सारी कथावस्तु जिसके इर्द-गिर्द घूमती है तथा पाठक के दिलों-दिमाग में अपनी जगह निर्माण करता है उन्हें प्रधान पात्र कहा जाता है। इस उपन्यास में निहित प्रधान पात्र का अंकन निम्नांकित है -

(1) नील

नील माथुर आधुनिक बेकार नवयुवकों का प्रतिनिधि पात्र है। इस उपन्यास का सबसे प्रधान पात्र नील है। उसका जीवन अनेक विवशताओं और आर्थिक विपन्नता से भरा हुआ है। उच्चशिक्षित और सुंदर नील दिल्ली महानगर से निकलकर नौकरी पाने हेतु मुंबई शहर जाता है। वह अखबार में प्रकाशित विज्ञापन के आधार पर श्रीमती दस्तुर के घर जाता है। श्रीमती दस्तुर पाँच हजार प्रतिमास वेतन पर कम्पेनियन के रूप में नील को नियुक्त करती है। वह इसलिए कि नील द्वारा अधेड़, धनाढ्य महिलाओं के लिए पुरुष वेश्या बनकर उनकी यौन तुष्टि करता है। वह स्त्रियों की यौन तृप्ति करने के लिए ओवरटाइम करता है। नील अपने इस व्यवसाय को गतिमान बनाने के लिए ग्राहक नारियों की तलाश में एम्बेसेडर के सोसायटी रेस्तराँ में सुबह ग्यारह बजे पहुँचता है। नील सुशिक्षित बेकार होने के कारण उदास होकर 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के 'मिटिंग ग्राऊंड' शीर्षक के अंतर्गत अपना विज्ञापन देता है - "कुशाग्र बुद्धि, संभाषण कुशल, सजीले युवक को युवती मित्र चाहिए। जिंदगी को बर्दाश्त के लायक बनाना हो तो आज ही संपर्क करें।"[1] अत: स्पष्ट होता है कि आर्थिक दृष्टि से संपन्न बनने के लिए आज के युवक कुछ भी काम स्वीकारने के लिए तैयार होते हैं क्योंकि वह उनकी विवशता होती है। नील कुमुद केशवानी से यौन

---

1. सुरेंद्र वर्मा - दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता, पृष्ठ - 102

संबंध की शुरुआत करता है। वह ब्लॉसम, यास्मीन, शिल्पा, पारुल, शहनाज, वैशाली तथा नैन आदि नारियों की यौन तृप्ति की प्यास बुझा देता है। अंत में वह एडस् का शिकार हो जाता है। नील नैन से शादी करता है लेकिन पारुल उसे बहुत चाहती है। पारुल के प्रेम के खातिर नील का दुर्दैवी अंत होता है। अतः नील के माध्यम से लेखक ने पैसों के पीछे पड़े युवक किस तरह शरीर बेचकर आर्थिक स्वावलंबी बनते हैं और अंत में मौत को गले लगाते हैं। इसका यथार्थ चित्रण किया है।

(2) भोला

भोला 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' का दूसरा प्रधान पुरुष पात्र है। भोला मथुरा से निकलकर नौकरी पाने के लिए मुंबई शहर आता है। भोला मुंबई महानगर में गैंगवार, तस्करी, जैकपॉट, मटका जैसे अवैध धंधों में शामिल होता है और बड़ा गुंडा बनता है। उसे पता चलता है - "पैसे की शक्ति किसी भी व्यवस्था में सेंध लगा सकती है।"[1] अतः स्पष्ट होता है कि पैसों के बिना कुछ भी हासिल नहीं होता। तस्करी में कैद हुए भोला को सब इन्स्पेक्टर भोसले ने वह मुर्तजा का आदमी होने के कारण बा-इज्जत रिहा किया जाता है। महानगर में पनपने वाले इस सत्य का भोला जैसे बेकार युवक पुख्ता सबूत है। अतः स्पष्ट है कि आज भोला जैसे युवक पैसों के खातिर गुंड बनने लगे हैं।

5.2.2.3-2 गौण पात्र

'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' उपन्यास में गौण पात्रों के रूप में किरण, श्रीमती शर्मा, शकुर भाई, मूर्तजा इलियास, श्रीमती मेहताब दस्तूर, फिरोज, शालू, कुमुद केशवानी, करुणा, कुंतल राव, शिल्पा, यास्मीन, ब्लॉसम, नायर, पारुल, नैन, उर्वशी, वैशाली, इन्स्पेक्टर गायतोंडे, नवीन आदि गौण पात्र कथावस्तु को आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुए हैं।

कुमुद, करुणा, शिल्पा, कुंतल राव, यास्मीन, वैशाली, पारुल आदि

---

1. सुरेंद्र वर्मा - दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता, पृष्ठ - 68

नारियाँ यौन तृप्ति के नये-नये आयामों को तलाश करती हैं। धनाढ्य, पूँजीपति समाज में पुरुष अपनी पत्नियों की यौन तृप्ति की प्यास न बुझा पाने के कारण विवाह संबंध टूटते जा रहे हैं। नवीन, जयंत, नितिन औद्योगिक पूँजीपति समाज के प्रतिनिधि पात्र हैं। इन्स्पेक्टर गायतोंडे, इन्स्पेक्टर कामथ जैसे पात्रों से पुलिस अव्यवस्था के दर्शन होते हैं। इनके चरित्र-चित्रण से भ्रष्टाचार के विविध आयाम दिखाई देते हैं। आज पूँजीपति लोग पैसे देकर काम करवाते हैं। इसमें भ्रष्टाचार करनेवाले निर्दोष छूटते हैं और आम आदमी उसके शिकंजे में फँसता है।

5.2.3 संवाद या कथोपकथन -

प्रस्तुत उपन्यास का तीसरा या मूल तत्त्व कथोपकथन अथवा संवाद है। उपन्यास में कथोपकथन उपन्यास की कथावस्तु के विकास का दर्शक है। पात्रों और पाठकों के बीच लेखक का न रहना ही प्रस्तुत उपन्यास का प्रमुख लक्षण है। कथोपकथन या संवादों की अपनी विशेषताएँ होती हैं, जो उपन्यास के कथानक को, चरित्रों को, उद्देश्य को, वातावरण को अपने ढंग से विकसित करती हैं और उन पर प्रकाश डालती हैं। डॉ. प्रतापनारायण टंडन के शब्दों में – "कथोपकथन को प्रत्यक्षत: कथानक-सूत्र से ही संबंधित होना चाहिए, क्योंकि यदि ऐसा नहीं होगा तो कथानक की पारस्परिक क्रमबद्धता नष्ट हो जायेगी और उसकी विविध घटनाओं में किसी प्रकार के सामंजस्य के बिना असंगति जान पड़ेगी।"[1] प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता है कि कथोपकथन और कथानक का परस्पर संबंध है। कथोपकथन में स्वाभाविकता, सजीवता, सरलता, रोचकता, प्रसंगानुकूलता, सार्थकता, संक्षिप्तता, उद्देश्यपूर्णता, उपयुक्तता और संबद्धता आदि गुण होते हैं। मुख्य रूप से देखा जाय तो कथोपकथन के द्वारा कुछ विचारों को सजीवता देने में सरलता पड़ती है। कथोपकथन से कथा का विकास होता है, पात्रों के चरित्रांकन में सहायता मिलती है तथा लेखक के मंतव्य का स्पष्टीकरण होता है। लेखक कोई न कोई उद्देश्य सामने रखकर साहित्य का निर्माण करता है। डॉ. मुक्ता नायडू के अनुसार – "किसी विशिष्ट उद्देश्य को लेकर

---

1. डॉ. प्रतापनारायण टंडन - हिंदी उपन्यास कला, पृष्ठ - 219

भी उपन्यासकार रचना का सृजन करता है। ऐसी स्थिति में उसका उद्देश्य उपन्यास में कहीं न कहीं से स्पष्ट झलक उठता है। उसे स्पष्ट करने में प्राय: कथोपकथन अग्रसर होते हैं।''[1] अत: स्पष्ट होता है कि कथोपकथन के माध्यम से उपन्यास का उद्देश्य तुरंत समझ में आता है। विवेच्य उपन्यासों में उपन्यासकार ने संवादों को प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करके अपने उद्देश्य को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

'अंधेरे से परे' उपन्यास में बिंदो और उसकी माँ में बहस चल रही थी। बिंदो की माँ बिंदो को समझाते हुए कहती है –

'' 'सोमू अभी कच्ची उम्र में है।'

'क्यों? तुम्हारे लिए गुल्लू नहीं था?'

'तुम भावनात्मक रूप से सोमू पर बहुत निर्भर हो।'

'तुम नहीं थी?'

'मैं सिर्फ अपने पर निर्भर करती थी'।''[2]

उपरोक्त उद्धरण के आधार पर कहना सही होगा कि बिंदो अपने पति और बच्चे के प्रति निराश है। बिंदो भावात्मक दृष्टि से कठोर हो गई है। उसे किसी की परवाह नहीं है। बिंदो पति से खुश न होने के कारण बच्चे के प्रति भी अनास्था प्रकट करती है और अवैध संबंधों के पीछे पड़ जाती है। संवाद संक्षिप्त होकर सार्थक और सजीव लगते हैं।

स्पष्ट है कि उक्त संवाद संक्षिप्त तथा प्रभावशाली है। छोटे बच्चों के मानसिकता पर प्रकाश डाला है। छोटे बच्चे कितने बुद्धिमान और जिज्ञासू होते हैं इसका प्रत्यक्ष उदाहरण सोमू है। इनसे स्पष्ट है कि कथोपकथन या संवादों की अपनी विशेषताएँ होती हैं।

'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास में परंपरावादी पिताजी और आधुनिक विचारों की वर्षा दो पीढ़ी के दो प्रतिनिधि पात्रों में बार-बार टकराहट होती है। वर्षा के पिताजी वर्षा से पूछते हैं –

---

1. डॉ. मुक्ता नायडू – इलाचंद्र जोशी का साहित्य शिल्प एवं संवेदना, पृष्ठ – 244
2. सुरेंद्र वर्मा – अंधेरे से परे, पृष्ठ – 103

" 'तुम्हारे नाम में क्या खराबी है?'

'अब हर तीसरे-चौथे के नाम में शर्मा लगा होता है।'

'मेरे क्लास में ही सात शर्मा हैं। ...'

और यशोदा?

घिसा-पिटा, दकियानूसी नाम। उन्होंने किया क्या था? सिवा क्रिश्न को पालने के?"[1]

प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता है कि दोनों के विचार अपनी-अपनी जगह ठीक लगते हैं। वर्षा स्त्री मुक्ति या स्त्री-स्वातंत्र्य चाहती है। इस कथोपकथन से कथासूत्र आगे बढ़ता है। साथ ही यह संवाद कथा को प्रत्यक्ष गतिशील बनाता है। यहाँ से ही वर्षा का अपने पिता और घरवालों के खिलाफ संघर्ष करना शुरू कर देती है।

कथोपकथन का एक उद्देश्य वातावरण की सृष्टि या देशकाल का बोध भी कराना है और किसी भी संस्कृति या समाज को प्रत्यक्ष करने के लिए उपन्यासकार के पास कथोपकथन एक सुंदर माध्यम है। लेखक पात्रों के वार्तालाप द्वारा समकालीन समाज अथवा संस्कृति को वह सहज ही साकार कर सकता है। 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' का एक उदाहरण द्रष्टव्य है -

शालू पड़ोस में हुए ताज़े दंगे के कारण डान्स बार से घर अकेली जाने से आशंकित थी। भोला मुर्तज़ा से अनुमति लेकर घर छोड़ने जाता है। उस वक्त शालू भोला के करीब आना चाहती है। तब शालू भोला से पूछती है -

" 'तेरे मुँह में जीभ नहीं है क्या?'

'मय चुड़ैल है क्या?'

'सो तो पता नहीं। पर मैं ब्रह्मचारी हूँ।'

'मय तेरा तप तोड़ रही है क्या?' "[2]

---

1. सुरेंद्र वर्मा - मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ - 16-17
2. सुरेंद्र वर्मा - दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता, पृष्ठ - 70-71

उपर्युक्त कथोपकथन से वातावरण निर्मिति करने का प्रयास किया है। संवादों की यह रोचकता वर्मा जी के उपन्यासों में स्थान-स्थान पर दिखाई देती है। भोला हनुमान भक्त है। लेकिन मुंबई आने के बाद पैसों के पीछे पढ़ने के कारण यह सब भूल जाता है। शालू नामक युवती के जाल में फँस जाता है। अत: कहना आवश्यक नहीं कि विवेच्य उपन्यासों में संवादों का निर्वाह कम मात्रा में क्यों न हो लेकिन अवश्य हुआ है। वर्मा जी के उपन्यासों में संवादों की लंबाई प्रसंगानुकूल कम-अधिक हुई है। सरस प्रसंगों का चित्रण शालीनता के हल्के आवरण में ही आया है। कहीं कहीं वर्मा जी के उपन्यासों में कथोपकथनों में नाटकीयता भी दिखाई देती है। सुरेंद्र वर्मा एक प्रख्यात नाटककार होने के कारण उनके उपन्यासों में नाटकीयता का गुण स्वाभाविक दिखाई ही देता है। पात्रानुकूल संवाद विवेच्य उपन्यासों में प्राय: सभी स्थान पर पाए जाते हैं। पात्रों के अनुरूप विषय, भाषा एवं विचारों की गंभीरता वर्मा जी के उपन्यासों में चित्रित वार्तालाप की एक अलग विशेषता रही है।

संक्षेप में कहना सही होगा कि उपन्यासकार ने कथोपकथन का प्रसंगानुकूल सफलतापूर्वक सृजन किया है, जिससे उपन्यास को एक गरिमा प्राप्त होती है।

5.2.4 देश-काल वातावरण -

देशकाल वातावरण उपन्यास का एक प्रमुख तत्त्व है। उपन्यास को यथार्थात्मक पृष्ठभूमि प्रदान करने का काम वातावरण करता है। जिस तरह उपन्यास की कथावस्तु में विविधता मिलती है उसी तरह वातावरण में विविधता होती है। उपन्यास में युगीन वातावरण प्रतिबिंबित होता है। जिस काल में उपन्यासकार जीता है, उसी परिवेश का जीता-जागता परिदृश्य वह पेश करता है। डॉ. प्रतापनारायण टंडन के शब्दों में - ''उपन्यास की विविध घटनाओं, उसके विविध पात्रों तथा उनके कार्य-कलाप के साथ ही विभिन्न परिस्थितियों में उनकी प्रतिक्रियाओं को एक पाठक

तब संभावित या किसी सीमा तक यथार्थ समझता है, जब वह यह देखे कि उसकी पृष्ठभूमि किस सीमा तक देश-काल का सही वातावरण और लेखा-जोखा प्रस्तुत करती है।''[1] प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता है कि उपन्यास के कथानक तथा पात्रों दोनों के लिए विभिन्न परिस्थितियाँ अर्थात् देशकाल वातावरण की जरूरत होती है। वहाँ स्थानीय ऐतिहासिक, सामाजिक तथा राजनीतिक आदि वातावरण का उपन्यासों में महत्त्व होता है। देशकाल वातावरण में स्थान, काल के साथ-साथ राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और महानगरीय आदि वातावरण का चित्रण अंतर्निहित होता है। डॉ. अर्जुन चव्हाण सही लिखते हैं - ''आजादी के पश्चात् का भारतीय समाज अपने पूर्ववर्ती समाज से अलग है। शिक्षा का प्रसार, सुधारवादी आंदोलन, पाश्चात्य संस्कृति से संपर्क, आधुनिक चिंतनधारा, औद्योगिक क्रांति, वैज्ञानिक प्रगति आदि के कारण एक नया समाज सामने आया। शिक्षा तथा नए विचारों के प्रचार-प्रसार ने युवा पीढ़ी के प्राचीन रूढ़ियों और परंपराओं के प्रति विद्रोह के लिए प्रेरित किया। इस पीढ़ी को लगा कि परंपरागत मूल्य और आदर्श उसकी समस्याओं का समाधान करने में असमर्थ है। उसकी दृष्टि में परंपरा, रीति-रिवाज, आदर्श आदि निरर्थक है।''[2] अत: स्पष्ट है कि शिक्षा का प्रचार-प्रसार होने के कारण वर्तमान-युग में परिवर्तन नजर आता है और इसी का साक्षात्कार हमें समकालीन उपन्यासों में दृष्टिगोचर होता है।

वर्मा जी के उपन्यासों का अध्ययन करने के उपरांत महसूस होता है कि परिवेश ही उनके लेखन की आधारशिला है। वे परिवेश से प्रेरणा पाकर युगीन सत्य से हमें रुबरु करवाते हैं। इसके अलावा समकालीन परिस्थितियों का व्यापक एवं गहन प्रभाव भी वर्मा जी के लेखन पर पड़ा। विवेच्य उपन्यासों में महानगरीय चित्रण अधिकतर मात्रा में हुआ है।

हमारे यहाँ समाज सुधारकों ने दहेज प्रथा, अंधविश्वास को दूर करने हेतु अनेक प्रयास किए हैं लेकिन आज भी इस मानसिकता में बदलाव नहीं आ रहे हैं।

---

1. डॉ. प्रतापनारायण टंडन - हिंदी उपन्यास कला, पृष्ठ - 300
2. डॉ. अर्जुन चव्हाण - राजेंद्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन, पृष्ठ - 57

सुरेंद्र वर्मा के 'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास में इसी स्थिति का जिक्र मिलता है। प्रस्तुत उपन्यास में चारुश्री फिल्म हिट हो जाए इसीलिए मंदिर जाती है। वह वर्षा से कहती है - ''शाम को बिड़ला मंदिर में चढ़ावा भेज रही हूँ कि हे भगवान, फिल्म चल जाए।''[1] प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता है कि आज शिक्षित लोग हो या अनपढ़, सभी ईश्वर को मानते हैं।

आज दान-धर्म, सत्यनिष्ठा के स्थान पर महाजनी सभ्यता पनपने लगी है। समाज में अमीर वर्ग संपन्नता की ओर अग्रसर होता गया तो गरीब वर्ग और भी गरीब होता गया है। इस गरीबी को दूर करने के लिए आज युवक गलत मार्ग का प्रयोग इस्तमाल करते हैं। 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' में चित्रित नील और भोला को बेकारी से निपटने के लिए पुरुष वेश्या तथा अंडरवर्ल्ड की पनाह लेनी पड़ती है। यह सब परिवेश की उपज है। प्रस्तुत उपन्यास में इस पर विचार व्यक्त किए है।

'मुझे चाँद चाहिए' में वर्षा ने अपने पिताजी द्वारा प्रस्थापित धर्म को भ्रष्ट करके धार्मिक मूल्य टूटन को स्पष्ट कर दिया है। अपने घर-परिवार, धर्म और संस्कृति के मूल्यों की अवहेलना करने वाली वर्षा के प्रति पिताजी नाराजगी व्यक्त करते हैं। पिताजी वर्षा से कहते हैं - ''तू नौटंकी में काम कर रही है? ... कान खोलकर सून ले, हर बात की हद होती है। आखिर हमारे घर की भी कोई इज्जत है।''[2] अत: स्पष्ट होता है कि वर्षा के रूप में नई पीढ़ी और उसके परिवार के माता-पिता तथा बड़े भाई के रूप में पुरानी पीढ़ी के बीच संघर्ष दिखाकर सुरेंद्र वर्मा ने पुराने मूल्यों और नए मूल्यों के बीच टकराहट दिखाकर वातावरण निर्मिति की है। सामाजिक वातावरण के अंतर्गत 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' में तस्करी का माल हथियाने वाले तस्करों को पुलिस कैसे साथ देती है, इसका चित्रण बड़े पैमाने में मिलता है। भोला और गफूर तस्करी का माल हथियाने की तैयारी में जुट जाते हैं। पुलिस भी उनका साथ निभाती है। सबीना एअर लाईन्स से ब्रसेल्स से वाया दुबई आनेवाले सूटकेस को इंटेलीजेंस ब्यूरो की निगाह से बचाने की मदद एअर इंडिया के लोडिंग सुपरवाइजर

1. सुरेंद्र वर्मा - मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ - 267
2. वही, पृष्ठ - 29

कोटनीस करते हैं। भोला इन सभी से परिचित हो गया था – "नये साल में सबके यहाँ उपहार पहुँचाने गया था। वह इन अफसरों को रंगीन टी.व्ही., वी.सी.आर., सिलाई मशीन, मोटर-साइकिल, कमीज और सूट का कपड़ा, साडियाँ, स्कॉच की बोतलें आदि दे आया था।"[1] अत: स्पष्ट है कि गैंगवार और पुलिस यंत्रणा कितनी घिनौनी हो गयी है इसका यथार्थ रूप में चित्रण किया है।

'अंधेरे से परे' उपन्यास में सभी पात्रों के अकेलेपन के सच को उकेरा गया है। ग्यारह-बारह वर्षीय सोमू माँ-बाप का प्रेम न मिलने से जीवन का एकाकीपन काट रहा है। एकमात्र प्रिय बिल्ली (जुगनू) है जिसके साथ वह अपनी मन की बात कहता है। बिल्ली की मृत्यु के बाद सोमू की स्थिति का चित्रण उपन्यासकार ने उपन्यास में गहरी संवेदनशीलता के साथ किया है। माँ-बाप नौकरीपेशा होने के कारण बच्चे की परवरिश में कनियाँ नजर आती है। जित्तन सोचता है कि इस छोटे बच्चे का जीवन-दर्शन क्या होता है? तब बिंदो जित्तन से कहती है – "क्या यही छोटा बच्चा एक दिन देश का नागरिक नहीं बनेगा? यही छोटी-छोटी बातें हैं, जो आगे चलकर लांग रन में ... मेरी तुमसे हाथ जोड़कर बिनती है कि तुम लांग रन में सोचना छोड़ दो। अगर तुमने लमहे भर के लिए शॉर्ट रन में भी सोचा होता, तो आज यह हालत नहीं होती।"[2] इससे गुजरते हुए लगता है कि सोमू की स्थिति अन्य बच्चों से भिन्न नहीं है।

इस प्रकार पारिवारिक विघटन, उच्चवर्गीय जीवन के अंतर्विरोध, बाहर और भीतर के जीवन का तनाव आदि का चित्रण बडी ही खुबसूरती से किया है।

प्रकृति का मानव की मानसिकता पर हमेशा प्रभाव रहा है। वर्मा जी के उपन्यासों में प्रकृति का अत्यंत काव्यमय एवं भावपूर्ण वर्णन वातावरण में अलग ही रंग भर देता है, जैसे उपन्यास में छोटे बच्चों की शरारतें, बारिश, चिड़ियों का वर्णन, रात के अंधेरे का वर्णन आदि। एक विज्ञापन में प्राकृतिक वर्णन करते हुए कहते हैं – "भारत एक कृषिप्रधान देश है भारतमाता गाँवों में रहती है और एरियल सर्वे के

---

1. सुरेंद्र वर्मा – दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता, पृष्ठ – 69
2. सुरेंद्र वर्मा – अंधेरे से परे, पृष्ठ – 67-68

समान सामने झिलमिला गए। छोटे-बड़े खेत-फसल से लहलहाते, हल चलाता किसान, रहट से गिरती पानी की धारा, अमराई में कूकती कोयल, सांझ-ढले सिवान पर धूल उड़ाते गायों के झुंड की वापसी, चौपाल पर अलाव के आसपास कजरी व बिरहा की ताने...।''[1] इस कथन से स्पष्ट होता है कि प्रकृति के सभी अंगों को स्पर्श किया है। 'मुझे चाँद चाहिए' में निरंतर बारिश का वर्णन करते समय प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने लिखा है - ''मृदंग के समान गड़गड़ाते हुए बिजली की डोरी वाला इंद्रधनुष चढ़ाये हुए ये बादल अपनी तीखी धारों के पैने बाण बरसा कर परदेस में पहुँचे हुए लोगों का मन कसमसाये डाल रहे हैं।''[2] अत: स्पष्ट होता है कि लेखक ने बारिश का वर्णन अत्यंत सराहनीय रूप से किया है।

इसके अतिरिक्त उनके उपन्यासों में जहाज, होटल, होस्टल, नाट्यगृह, बस स्टेशन, कमरा आदि का भी संक्षेप में आकर्षक वर्णन किया है। प्रसंगानुसार प्रवृत्ति के अत्याधिक लघु चित्रों को भी अंकित किया है। उनमें सुरम्यता और सरसता भी निर्विवाद रूप से उभरी है। जो उपन्यासों का अविभाज्य अंग बन गया है।

आर्थिक वातावरण में तत्कालीन समाज या लोगों की आर्थिक परिस्थिति का चित्रण होता है। अर्थ की महत्ता बढ़ने के कारण समाज में दो वर्ग बन गए हैं। बेकारी, भ्रष्टाचार, गरीबी, बेरोजगारी के कारण आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ता है। 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' के युवा पात्र बेरोजगारी, गरीबी के कारण पुरुष वेश्या और अंडरवर्ल्ड के गैंग में काम करते हैं तो दूसरी ओर धनाढ्य, पूँजीपति, उच्चवर्ग की महिलाएँ पैसों की अतिरिक्तता के कारण यौन तृप्ति के पीछे पड़ी हुई नजर आती है। 'अंधेरे से परे' उपन्यास में बिंदो आर्थिक समस्या के कारण तंग आ चुकी है, पति भी किसी प्रकार की नौकरी नहीं करता है। तब बिंदो कहती है - ''सस्पेंड हुए पूरा साल होने को आ रहा है। जो थोडा-सा बचाया था, खा-पीकर बराबर कर चुके हैं ... अपना नहीं, मेरा नहीं, कम-से-कम बच्चे की तो सोचो।''[3] इस कथन से स्पष्ट होता है कि, बिंदो अपनी आर्थिक स्थिति को अभिव्यक्त करती है।

---

1. सुरेंद्र वर्मा - अंधेरे से परे, पृष्ठ - 57
2. सुरेंद्र वर्मा - मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ - 322
3. सुरेंद्र वर्मा - अंधेरे से परे, पृष्ठ - 13

महानगरीय वातावरण में स्थान तथा काल के साथ-साथ महानगर के विविध पक्ष-विपक्ष का चित्रण अंतर्निहित होता है। बार, क्लब, होटल, रेस्तराँ, महानगरीय भीड़भाड़, अकेलापन, विवाह विच्छेद, भ्रष्टाचार, व्यसनाधीन नारी, मूल्य-विघटन, स्वच्छंदी नारी, बेकारी, फिल्मी माहौल, पुरुष वेश्यावृत्ति, कर्तव्यहीन नारी, बिनब्याही मातृत्व का स्वीकार, विवाह संस्था का विरोध आदि प्रवृत्तियाँ महानगरीय वातावरण का परिचय कराती है।

'अंधेरे से परे' उपन्यास में दिल्ली महानगर का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है। जित्तन और गुल्लू की मानसिक जड़ता, संत्रास, पीड़ा, कुंठित विचार, बिंदो का अर्थाभाव, नौकरी करना आदि के कारण पति-पत्नी के बीच अनबन होती है। परिणामत: वह पर पुरुष से संबंध रखती है। पति-पत्नी की अनबन के कारण बच्चे के प्रति उत्तरदायित्व हीनता दिखाई देती है।

'मुझे चाँद चाहिए' में वर्षा का अनेक युवकों के साथ यौन संबंध रखना, विवाह के पूर्व गर्भवती होना, प्रेमी हर्ष की मृत्यु के बाद उसके बच्चे की माँ बनने का फैसला लेना, हर्ष का चाँद को पाने के लिए स्वयं को मिटा देना आदि प्रसंग प्रस्तुत उपन्यास के वातावरण के ही द्योतक हैं। वर्षा के पिताजी परंपरावादी होने के कारण वर्षा का परंपरा को तोड़ना उन्हें अच्छा नहीं लगता। वर्षा पिताजी को उत्तर देती हुई कहती है - ''वंश में जो नहीं हुआ, वह आगे भी न हो, यह जरुरी नहीं।... यह ब्याह मैं नहीं करूँगी। तुम लोग चाहे मारो, चाहे कूटो।''[1]

'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' उपन्यास में महानगरीय चित्रण दिखायी देता है। पूँजीपति महिलाओं का नशापान करना, नाच-गाना करना, बार, रेस्तराँ में रंगरलिया मनाना, यौन-तृप्ति के लिए पुरुष-वेश्या इस संकल्पना को साकार करना आदि घटनाएँ प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित वातावरण का परिचय देती है। अत: कहना गलत नहीं होगा कि प्रस्तुत उपन्यास में महानगरीय वातावरण का परिचय मिलता है।

भारतीय हिंदु समाज जन्म से लेकर मृत्यु तक धार्मिक संस्कारों से जकड़ा हुआ है। परिवर्तन के दौर में जहाँ राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक मान्यताओं

---

1. सुरेंद्र वर्मा - मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ - 77

में बदलाव आया है तो भला धर्म इससे अछूता कैसे रह सकता है। वर्मा जी के उपन्यासों में पूजा-पाठ, व्रत, उपवास की चर्चा, 'मुझे चाँद चाहिए' में की गई है। 'मुझे चाँद चाहिए' की गायत्री व्रत करती है। गायत्री की उम्र विवाह योग्य होने के कारण उसे देखने अनेक वर आते हैं लेकिन बाद में संदेश भेज देंगे ऐसा कहकर जाते हैं तो कई लोग ऐसे भी हैं कि वे सिर्फ मौन ही रहते हैं। गायत्री का परिवार साधारण होने के कारण दहेज दे नहीं सकते। इसी कारण उसके माँ-बाप चिंतित रहते हैं। गायत्री व्रत शुरू करती है। वर्षा, गायत्री के बारे में कहती है - "जिज्जी ने अपने-आप ही दुर्गा सप्तशती का पाठ आरंभ किया और रोज शाम मंदिर में जल चढ़ाने जाने लगी।"[1] अत: गायत्री विवाह के वास्ते व्रत रखती है। इसी उपन्यास की युवती वर्षा के घरवाले वर्षा को पढ़ने और नौकरी करने नहीं देते हैं। दिव्या कत्याल और सिंहल सर की मदद से आगे की पढ़ाई के लिए शहर जाना चाहती है। वह भगवान के सामने मनौती माँगती है - "उसने मन्नत माँग ली थी, अगर जीती-जागती, सही सलामत जून तक पहुँच गई, तो ग्यारह रुपए का प्रसाद चढ़ायेगी।"[2] अत: स्पष्ट होता है कि वर्मा जी ने धार्मिक वातावरण को दिखाया है। इस प्रकार वर्मा जी ने अपने उपन्यासों में देशकाल वातावरण के चित्रण द्वारा समाज से एक नजदीकी रिश्ता स्थापित करने की चेष्टा की है।

5.2.5 भाषा शैली -

भाषा मूलत: अपनी अनुभूति एवम् संवेदन के संप्रेषण का माध्यम होती है, जिसका निश्चित सामाजिक आधार होता है। किसी भी मनुष्य या रचनाकार की मानसिक बुनावट की पहचान उसके द्वारा प्रयुक्त भाषा संबंधी अभिव्यक्ति में है। लेखक के बोलचाल की भाषा और लेखन की भाषा में अंतराल नहीं होता है। प्रत्येक रचनाकार अपनी भाषा-क्षमता का परिचय पात्रगत संवाद और अभिव्यक्तिगत शैली के द्वारा होता है। वह समर्थ रचनाकार बार-बार भाषा-शैली संबंधी प्रयोगधर्मिता में अपनी शक्ति की परीक्षा भी देते रहता है। पात्रगत भाषा शैली का प्रयोग करना किसी भी कथाकार की भाषायी क्षमता का परिचायक है।

---

1. सुरेंद्र वर्मा - मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ - 24
2. वही, पृष्ठ - 77

भाषा भावों को व्यक्त करने का महत्त्वपूर्ण साधन है। मनुष्य अपने विचारों के आदान-प्रदान के लिये शब्दों, वाक्यों का प्रयोग करता है। अत: मानव जीवन जैसे-जैसे विकसित और परावर्तित होता गया, भाषा का रूप परिवर्तित होता गया। साहित्य मानवी भाव-भावनाओं और विचारों का चित्र है तो भाषा भावनाओं और विचारों को प्रस्तुत करने का प्रमुख साधन है। संवेदनाओं, भावनाओं, विचारों तथा अभिव्यक्ति में व्यक्ति भिन्नता के अनुसार विभिन्नता पायी जाती है। पात्रों के चरित्र, उनकी शिक्षा, उनकी संस्कृति तथा सामाजिक स्थान के अनुसार भाषा का प्रयोग सर्वत्र परिलक्षित होता है। डॉ. सुभाष दुरुगकर के शब्दों में - ''साहित्यकार जिस भाषा का प्रयोग करें वह प्रचलित जनजीवन के अनुकूल, बोधगम्य और स्पष्ट होनी चाहिए। पाठकों के लिए वह केवल बोधगम्य ही न बने, वह उनके केवल मनोरंजन का ही साधन न बने बल्कि विचारों के वहन का भी साधन बने।''[1] प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता है कि साहित्य बोधगम्य, मनोरंजन और विचारों को व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करता है। साहित्य समाज का ही दर्पण होता है।

वर्मा जी के विवेच्य उपन्यासों में पात्रानुकूल भाषा का सर्वत्र प्रयोग हुआ है। संक्षिप्तता, सार्थकता, सजीवता तथा स्वाभाविकता भाषा के इन गुणों का ध्यान वर्मा ने अपने उपन्यासों में रखा है। भाषा की वास्तविक शक्ति को पहचान कर उन्होंने उसी भाषा का प्रयोग अपने उपन्यासों में किया है। वर्मा जी द्वारा प्रयुक्त भाषा का विश्लेषण करने पर उनके द्वारा प्रयुक्त भाषा के अलग-अलग रूप तथा अलग-अलग भाषाओं के शब्द प्राप्त होते हैं -

5.2.5.1 विवेच्य उपन्यास : भाषिक प्रयोग :-

विवेच्य उपन्यासों में बोलचाल की, चित्रात्मक तथा प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग मिलता है -

5.2.5.1.1 बोलचाल की भाषा का प्रयोग

प्रस्तुत उपन्यासों में कुछ लोग गाँवों, कस्बे से आने के कारण बोलचाल

---

1. डॉ. सुभाष दुरुगकर - राही मासूम रजा का कथा साहित्य, पृष्ठ - 207

की स्वाभाविक हिंदी का प्रयोग करते हैं। 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' इस उपन्यास में प्रयुक्त उदाहरण द्रष्टव्य है –

"साली चवन्नी बराबर कोकीन कितने कंटाल के बाद लेके आया। हिप्पी पाँच सौ निकालता था। माँ के यार जाने कहाँ से आ टपके। उससे सौ डालर निकलवाके छोड़ दिया। मेरे से बोले, पाँच हजार निकालो। ... साले पाँच हजार होते, तो मैं शादी नहीं बना लेता?"[1] उक्त उद्धरण से परिलक्षित होता है कि लेखक बोलचाल की भाषा में गालियों का प्रयोग कर रसात्मकतापूर्ण बनाने के सफल प्रयास करता है। इसी उपन्यास का और एक उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य है – "मुलुक गयेला है ... मेरे कूं पता नहीं ..."[2] "ओ देवा, क्या हो गया तेरे कूँ?"[3] प्रस्तुत उदाहरण में बोलचाल की भाषा बंबइया हिंदी का प्रयोग भी मिलता है। सुरेंद्र वर्मा के उपन्यास के जो पात्र आम जनता से आये हुए हैं वे सभी इसी बोलचाल की स्वाभाविक हिंदी का प्रयोग करते हैं।

5.2.5.1.2 चित्रात्मक भाषा का प्रयोग

वर्मा जी के उपन्यासों की चित्रात्मक प्रस्तुति देखते ही बनती है। पाठक उस दुनिया में विचरने लगता है। 'अंधेरे से परे' उपन्यास में एडवर्टायजिंग में काम करनेवालों का, दिल्ली के भिड़भाड़ का, बढ़ती गरिमा से हुई हालत का, यौन संबंध का, जुगनू (बिल्ली) के अपघात का, पार्टी में नाच-गाने का आदि घटनाएँ चित्रात्मक भाषा का परिचय देती है। नलिनी और गुलशन घूमने के लिए जाते हैं, उस वक्त नलिनी गुलशन के प्रति आकर्षित होती है। यह बात गुलशन को प्रत्यक्ष कह नहीं पाती है। वह बंदर के माध्यम से अपने मन की बातें गुलशन से कहती है। इस उपन्यास में प्रयुक्त उदाहरण द्रष्टव्य है – "बंदर की आँखों में पहचान का सूत्र था। उसने उल्टे पंजे से अपनी ठुड्डी खुजलाई। अपने-आप कुछ चीं.-चीं की। फिर जाली पर पिछली तरफ ऊपर चढ़ आया। एक छेद में पंजा बाहर निकाला और नलिनी की फैली हथेली से चने उठाने लगा।"[4] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि

1. सुरेंद्र वर्मा – दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता, पृष्ठ – 232
2. वही, पृष्ठ – 18
3. वही, पृष्ठ – 70
4. वही, पृष्ठ – 164

लेखक ने बंदर का वर्णन कर वातावरण का निर्वाह किया है। जिससे बंदर की छबी पाठकों के सामने झलकने लगती है।

सुरेंद्र वर्मा के 'मुझे चाँद चाहिए' में चित्रात्मक भाषा से अनेक प्रसंगों एवं घटनाओं को वाणी मिली है। इसमें वर्षा का परिवार के खिलाफ संघर्ष, अपने कैरियर में बाधक बातों से बचने के लिए वर्षा का आत्महत्या करने का प्रयत्न, वर्षा के परिवार के अर्थाभाव, वर्षा–शिवानी के बीच के लेस्बियन यौन संबंध, फिल्मी कलाकारों का नशापान, चंद्रप्रकाश के बीच के फ्री–सेक्स, फ्री–लव के प्रसंग आदि घटनाओं का चित्रात्मक भाषा में सुरेंद्र वर्मा ने अत्यंत प्रभावी वर्णन किया है।

'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' में नील के माध्यम से यौन संबंधों को चित्रित किया है और भोला के माध्यम से गुंडागर्दी की दुनिया को चित्रित किया है। महानगरीय जीवन में आनेवाला बदलाव का चित्रण तथा यौन संबंध इसमें प्रमुख है। इस उपन्यास का प्रमुख पात्र नील असंतुष्ट, धनाढ्य, पूँजीपति की काम–तृप्ति के लिए पुरुष वेश्या बनता है। सुरेंद्र वर्मा ने नील – ब्लॉसम, नील – यास्मीन, नील – पारुल, नील – कुमुद केशवानी, नील – शिल्पा, नील – वैशाली, नील – नैन आदि के संबंधों का वर्णन चित्रात्मक भाषा में किया है। गुनहगारी का, काले धंधों का, तस्करी व्यवसाय का तथा गुनहगारी टोलियों के बीच के संघर्ष आदि का चित्रण प्रभावी ढंग से किया गया है।

5.2.5.1.3 प्रतीकात्मक भाषा

प्रतीक ऐसे वस्तु को कहते हैं जिसके माध्यम से अन्य वस्तु का बोध हो। वर्मा जी ने प्रसंगानुकूल प्रतीकों का सहारा लेकर उपन्यासों की संवेदना को संप्रेषित किया है। सुरेंद्र वर्मा जी ने अपने उपन्यासों में प्रतीकों का प्रयोग किया है, जैसे – 'अंधेरे से परे' उपन्यास यह उपन्यास प्रतीकात्मक रूप में लिखा है। प्रस्तुत उपन्यास में वर्तमान मनुष्य का अकेलापन, साथ ही यौन–संबंध, माता–पिता के

झगड़ों के कारण बच्चों के प्रति उत्तरदायित्वहीनता आदि प्रतीकों को चित्रित किया है।

'मुझे चाँद चाहिए' में चाँद को प्रतीक रूप में प्रस्तुत किया है। वर्षा अभिनय कला और हर्ष रुपी चाँद को पाने के लिए परिवार और बाह्य परिवेश से संघर्ष कर अपने मंजिल को कैसे हासिल करती है जो 'चाँद' शीतलता या खुशी का प्रतीक है।

'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' में दो बेकार युवकों को लेखक ने दो मुर्दे कहा है। बेकारी से पीड़ित ये दो युवक महानगर की चकाचौंध में दो अलग-अलग रास्ते अपनाते हैं। एक पुरुष वेश्या बनता है तो दूसरा अंडरवर्ल्ड का नामी गुंडा बन जाता है। उपन्यास के अंत में नील का कत्ल करके उसे मुर्दा बनाया जाता है और भोला जिंदा होकर भी मुर्दा बनता है। यहाँ लेखक ने गुलदस्ता को प्रतीक मानकर दो मुर्दों की कहानी प्रस्तुत की है, जो भाषा को गरिमामयी बनाती है।

5.2.5.2 विवेच्य उपन्यास : शब्द योजना :-

सुरेंद्र वर्मा के उपन्यासों में विविध शब्दों का प्रयोग मिलता है।

5.2.5.2.1 संस्कृत शब्द

सुरेंद्र वर्मा के उपन्यासों में संस्कृत के तत्सम और तद्भव शब्द देखने को मिलते हैं। वर्मा जी ने अपने उपन्यासों में संस्कृत शब्दों का प्रयोग किया है। उदाहरण स्वरूप कुछ शब्द इस प्रकार हैं - 'झंकार'[1], 'अनाथालय'[2], 'अनवरत'[3], 'हितैषी'[4], 'अध्यापक'[5], 'अविद्यमानता'[6], 'महत्त्वाकांक्षा'[7], 'सुवासित'[8], 'अभागिन'[9], 'शौचालय'[10], 'शुभाकांक्षिणी'[11] तथा 'स्वीकार्य'[12] आदि। संस्कृत शब्दों का प्रयोग वैसे तो कम मात्रा में दिखाई देता है।

---

1. सुरेंद्र वर्मा - अंधेरे से परे, पृष्ठ - 58
2. वही, पृष्ठ - 62
3. वही, पृष्ठ - 65
4. वही, पृष्ठ - 82
5. सुरेंद्र वर्मा - मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ-14
6. वही, पृष्ठ - 15
7. वही, पृष्ठ - 20
8. वही, पृष्ठ - 30
9. सुरेंद्र वर्मा-दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता,पृष्ठ-10
10. वही, पृष्ठ - 68
11. वही, पृष्ठ - 99
12. वही, पृष्ठ - 119

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

5.2.5.2.2 अरबी शब्द

वर्मा जी ने अपने उपन्यासों में चलती और प्रवाहमयी भाषा का सभी जगह प्रयोग किया है। परिणामस्वरूप उनके उपन्यासों में अरबी शब्दों की भरमार दिखाई देती है। निम्नलिखित अरबी भाषा के शब्द हैं जो विवेच्य उपन्यास में प्रयुक्त हैं, वे इस बात का प्रमाण है। उदाहरण स्वरूप कुछ शब्द यहाँ प्रस्तुत हैं – 'इस्तेमाल'[1], 'इज्ज़त'[2], 'गनीमत'[3], 'इश्तहार'[4], 'ताज्जुब'[5], 'गायब'[6], 'किस्मत'[7], 'इम्तिहान'[8], 'तक़ाजे'[9], 'मद्दे नज़र'[10], 'लिफ़ाफा'[11] तथा 'हाकिम'[12] आदि। अत: कहना गलत नहीं कि अरबी भाषा का लेखक पर प्रभाव नहीं है।

5.2.5.2.3 फारसी शब्द

सुरेंद्र वर्मा जी के उपन्यासों में फारसी के शब्द मिलते हैं। स्पष्ट है कि हिंदी तथा अंग्रेजी के अलावा भी फारसी भाषाओं का भी उन्हें अच्छा ज्ञान है। विवेच्य उपन्यास में चित्रित कहीं शब्दों के उदाहरण यहाँ प्रस्तुत हैं – 'गिरफ़्तार'[13], 'चश्मा'[14], 'बिस्तर'[15], 'निगाह'[16], 'दहलीज़'[17], 'पैदाइश'[18], 'ख़ामख़ाह'[19], 'आवाज़'[20], 'ख़ानदान'[21], 'तख़्तेताऊस'[22], 'आज़माकर'[23] तथा 'दरवाज़ा'[24] आदि। अत: वर्मा जी ने फारसी शब्दों का इस्तेमाल कम मात्रा में किया हुआ दृष्टिगोचर होता है।

5.2.5.2.4 अँग्रेजी शब्द

सुरेंद्र वर्मा ने अपने उपन्यासों में अँग्रेजी शब्दों का ज्यादा प्रयोग किया है। मुंबई में रहते हुए वहाँ के लोगों में विशेषत: फिल्म उद्योग से जुड़े लोगों में हिंदी,

---

1. सुरेंद्र वर्मा – अंधेरे से परे, पृष्ठ – 22
2. वही, पृष्ठ – 19
3. वही, पृष्ठ – 45
4. वही, पृष्ठ – 56
5. सुरेंद्र वर्मा – मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ – 180
6. वही, पृष्ठ – 209
7. वही, पृष्ठ – 251
8. वही, पृष्ठ – 281
9. सुरेंद्र वर्मा–दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता, पृष्ठ–9
10. वही, पृष्ठ – 10
11. वही, पृष्ठ – 69
12. वही, पृष्ठ – 115
13. सुरेंद्र वर्मा–अंधेरे से परे, पृष्ठ – 2
14. वही, पृष्ठ – 14
15. वही, पृष्ठ – 112
16. वही, पृष्ठ – 163
17. सुरेंद्र वर्मा–मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ–66
18. वही, पृष्ठ – 84
19. वही, पृष्ठ – 164
20. वही, पृष्ठ – 180
21. सुरेंद्र वर्मा–दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता, पृष्ठ–10
22. वही, पृष्ठ – 11
23. वही, पृष्ठ – 24
24. वही, पृष्ठ – 35

अँग्रेजी शब्दावली से युक्त भाषा का प्रचलन भी स्थान-स्थान पर दिखाई देता है। बोलचाल की भाषा में अँग्रेजी शब्दों के प्रयोग की प्रवृत्ति तो इतनी बढ़ गई है कि वाक्य हिंदी का है या अँग्रेजी का यह संभ्रम निर्माण होता है। फलस्वरुप हजारों अँग्रेजी शब्द उपन्यास में देखने को मिलेंगे। प्रस्तुत उपन्यासों की भाषा में स्वाभाविकता और यथार्थता का समावेश हुआ है। पात्र जिस भाषा की माँग करते हैं उसी भाषा का प्रयोग करते हुए उन पात्रों को सादर करने का प्रयोग वर्मा जी ने किया है। विवेच्य उपन्यास में चित्रित अँग्रेजी शब्दों के उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य हैं - 'डिपार्टमेंट'[1], 'फिनिशिंग'[2], 'वाटरगेट'[3], 'एनसायक्लोपीडिया'[4], 'थिएटर'[5], 'इंटरमिडिएट'[6], 'कांग्रेचुलेशंस'[7], 'इंटेलैक्चुअल'[8], 'मनीऑर्डर'[9], 'ड्रायविंग'[10], 'गुडमार्निंग'[11], 'एंटरप्राइज'[12] आदि।

5.2.5.2.5 द्विरुक्त शब्द

वर्मा जी ने अपनी भाषा में द्विरुक्त शब्दों का भी प्रयोग किया है। जैसे - 'नन्ही-नन्ही'[13], 'जल्दी-जल्दी'[14], 'छम-छम'[15], 'झन-झन'[16], 'अलग-अलग'[17], 'टिल-टिल'[18], 'भाँति-भाँति'[19], 'कटी-कटी'[20], 'टुकुर-टुकुर'[21], 'पहुँचते-पहुँचते'[22], 'भाँय-भाँय'[23], 'धीरे-धीरे'[24] आदि।

5.2.5.2.6 जोड़े के साथ आये हुए सादृश्य शब्द

वर्मा जी ने अपने उपन्यासों में जोड़े के साथ आये हुए सादृश्य शब्दों का भी प्रयोग किया है, जैसे - 'इधर-उधर'[25], 'पिकनिक-विकनिक'[26], 'इर्द-गिर्द'[27],

---

1. सुरेंद्र वर्मा-अंधेरे से परे, पृष्ठ - 3
2. वही, पृष्ठ - 5
3. वही, पृष्ठ - 7
4. वही, पृष्ठ - 8
5. सुरेंद्र वर्मा-मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ - 97
6. वही, पृष्ठ - 13
7. वही, पृष्ठ - 276
8. वही, पृष्ठ - 335
9. सुरेंद्र वर्मा-दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता, पृष्ठ-54
10. वही, पृष्ठ - 69
11. वही, पृष्ठ - 116
12. वही, पृष्ठ - 118
13. सुरेंद्र वर्मा - अंधेरे से परे, पृष्ठ - 1
14. वही, पृष्ठ - 2
15. वही, पृष्ठ - 9
16. वही, पृष्ठ - 10
17. सुरेंद्र वर्मा - मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ - 49
18. वही, पृष्ठ - 91
19. वही, पृष्ठ - 93
20. वही, पृष्ठ - 105
21. सुरेंद्र वर्मा-दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता, पृष्ठ-15
22. वही, पृष्ठ - 199
23. वही, पृष्ठ -
24. वही, पृष्ठ -
25. सुरेंद्र वर्मा-अंधेरे से परे, पृष्ठ - 106
26. वही, पृष्ठ - 162
27. वही, पृष्ठ - 164

'जब-तब'[1], 'लोट-पोट'[2], 'हक्की-बक्की'[3], 'क्षत-विक्षत'[4], 'खुजली-वुजली'[5], 'आमने-सामने'[6], 'जीर्ण-शीर्ण'[7] आदि। कहना आवश्यक नहीं कि वर्मा जी के भाषा में सादृश्य शब्द के कारण लचीलापन आया है।

5.2.5.2.7 ध्वन्यार्थक शब्द

वर्मा जी ने वातावरण निर्मिति के लिए ध्वन्यार्थक शब्दों का प्रयोग किया है, जैसे - 'डडमडमडा, डडमडमडा, डडमडमडा, डडमडमडम ... पपमपमपम, पपमपमपम, पपमपमपम, पपमपमपम ... इपिपपिप्पा, इपिपपिप्पा, इपिपपिप्पा, इपिपपिप्पा। अजी हम हैं, कफ्स है और मातम डमडमा डमडम...'[8], 'किवाड़ की खट्खट् ... कागज की सरसराहट'[9], 'बारिश की निरंतर टप् टप् टप्'[10], 'डिंगडिंग ... डा डा ... डिंगडिंग ... डा डा'[11], 'जूतों की आहट - खट्-खट्-खट् ... खट्-खटाखट्-खट् ... खटखटाखट खटखटाखट खटखटाखट ...'[12], फोन की घंटी 'ट्रिंग-ट्रिंग, ट्रिंग-ट्रिंग, ट्रिंग-ट्रिंग...'[13]। स्पष्ट है कि वर्मा जी ने उपन्यासों की भाषा में किसी वस्तु की विशिष्ठ आवाज को व्यक्त करने के लिए ध्वन्यार्थक शब्दों का प्रयोग किया है। जो लेखक के अभिव्यक्ति क्षमता का परिचय देते हैं।

5.2.5.3 विवेच्य उपन्यास : वाक्य विन्यास के विविध प्रयोग :-

वर्मा जी ने अपने उपन्यासों में वाक्यरचना संबंधी नए-नए प्रयोग किए गए हैं -

5.2.5.3.1 डॉट वाले अंश

वर्मा जी के उपन्यासों में डॉट याने अंतराल चिह्नों का प्रयोग किया गया है। उदा. "...धन्यवादसहित ... आपका ... दैटस आल ... थैक्यू ...।"[14] "धवनजी, माफ कीजिए ... आज तो नहीं आ पाऊँगा ... परिवार के साथ बैठा हूँ ...

---

1. सुरेंद्र वर्मा - अंधेरे से परे, पृष्ठ-165
2. सुरेंद्र वर्मा-मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ - 54
3. वही, पृष्ठ - 70
4. वही, पृष्ठ - 360
5. वही, पृष्ठ - 367
6. वही, पृष्ठ - 374
7. वही, पृष्ठ - 388
8. सुरेंद्र वर्मा - अंधेरे से परे, पृष्ठ - 5-6
9. वही, पृष्ठ - 30
10. वही, पृष्ठ - 101
11. वही, पृष्ठ - 111
12. वही, पृष्ठ - 127
13. वही, पृष्ठ - 133
14. वही, पृष्ठ - 61

कल ? ... लंच पर ठी है ... शाम को रिपटेरी के दोस्तों के साथ प्रोग्राम है ... अच्छा, मैं बाहर बजे आप के ऑफिस ही आ जाऊँगा ..., अशोका ? ... धवनजी, मैं स्टार नहीं हूँ ... पराँठेवाली गली में चलेंगे ..."[1] "अब कामना के ज्वार की शुरुआत ... अब ज्वार में तीखा आलोड़न ... अब कगार टूट रहा है ... और इसे कहते हैं - पैशन ..."[2] इससे स्पष्ट होता है कि वर्मा जी के उपन्यासों में डॉटवाले अंश से युक्त वाक्यों की भी भरमार परिलक्षित होती है।

5.2.5.3.2 छोटे-छोटे वाक्य

वर्मा जी ने छोटे-छोटे वाक्यों में अर्थ गर्भित भाषा का प्रयोग किया है, जैसे - "फिल्म शुरु हुई। सब कुछ सुंदर। रंगारंग। आकर्षक। जिंदगी हंसी व मुस्कानों के साथ आगे बढ़ती हुई।"[3]

"दराज बंद थी। फिर बहुत हलकी किर्र-किर्र।
बाहर निकला। किवाड़ भेड़ दिया।
कमरा। लैंप जलाया।
मन बिल्कुल शांत था। निरुद्विग्न।"[4]

"औसद क़द पर गहरा सावला रंग। बड़े-बड़े बाल। दो दिन की दाढ़ी। दोन दिन पहना हुआ कुर्ता-पजामा। केसर मुनक्का के सुबह सुबह सेवक से लाल हुई आँखे। पान से रंगे दाँत। हाथ में बीड़ी का बंडल।"[5]

"वह बाहर आ गया। कर्मचारी ने सींखचोंवाला द्वार बंद किया। खुले अहाते में हवा थी। पर साथ ही मौत की बोझिल शव के पलैटफार्म से हल्का-सा धुआँ उठा।"[6] अत: कहना आवश्यक नहीं कि वर्मा जी के उपन्यास में छोटे-छोटे वाक्य देखने को मिलते हैं लेकिन ये वाक्य अर्थपूर्ण और सारगर्भित परिलक्षित होते हैं।

5.2.5.3.3 अंग्रेजी-हिंदी वाक्य

वर्मा जी के उपन्यासों में कुछ अंग्रेजी मिश्रित हिंदी वाक्य भी आये हैं,

---

1. सुरेंद्र वर्मा - मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ - 239
2. सुरेंद्र वर्मा - दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता, पृष्ठ - 60
3. सुरेंद्र वर्मा - अंधेरे से परे, पृष्ठ - 34
4. वही, पृष्ठ - 47
5. सुरेंद्र वर्मा - मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ - 192
6. सुरेंद्र वर्मा - दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता, पृष्ठ - 246

जैसे – "आपको थोड़ा प्रैक्टिकल तजुर्बा हो जाए और विजुलाइजर के साथ आपका ठीक को-ऑर्डिनेशन बैठ जाए, तो इस टीम के नतीजे बहुत अच्छे हो सकते हैं।"[1]

"एडीटिंग टेबिल पर क्लोजअप फेंक देगा।"[2] "फिर तुम अपने कैरेक्टर को लेकर इंटैलैक्चुअल सवाल पूछने लगे, मेरे इस एक्शन का मोटीवेशन और एस्थेटीक पर्सपैक्टिव क्या है।"[3]

"मुझे इमोशनली डिस्टर्ब कर दिया ... और सुहागरात पर मेरे पीरियड्स आ गए ..."[4] आदि। अत: स्पष्ट है कि वर्मा जी ने अपने उपन्यासों में अंग्रेजी और हिंदी मिश्रित वाक्यों का प्रयोग अत्यंत सफलता तथा आवश्यकता के अनुसार किया है ।

5.2.5.3.4 पूर्ण अंग्रेजी वाक्य

वर्मा जी ने पात्र एवं परिवेश के अनुसार कहीं जगह पूरे के पूरे अंग्रेजी वाक्यों का प्रयोग देखने को मिलता है, जैसे – "... आइ रेयरली कम एक्रॉस दैट नैक।"[5]

"आइ स्पेंड एट आवर्स ए डे हियर ... डू यू एक्सपैक्ट मी टु वर्क टू ?"[6]

"थाई एयर हॉस्टेस शी नैवर फरगैट्स हाऊ इंपोर्टेंट यू आर ... फार द मैन द मल्टी-फेसेटिड पर्सनैलिटी-ए मैनी स्प्लैनडर्ड आफ तुकाराम शर्ट्स ..."[7]

"यू वेट आउटसाइड। वी विल कॉल यू।"[8]

"विल यू प्लीज कीप एन आइ औन माइ बैग ?"[9]

"आइ कैन टैल यू, बट नॉट यू योर फ्रेंड ... ही डिडन्ट रिटर्न माइ बॉल।"[10]

तथा

"वर्षा, आय' म श्योर यू दिल गो प्लेसेस !"[11] आदि। अत: वर्मा जी ने अंग्रेजी वाक्यों तथा शब्दों का इस्तेमाल अधिकतर मात्रा में किया हुआ दृष्टिगोचर होता है।

---

1. सुरेंद्र वर्मा – अंधेरे से परे, पृष्ठ – 62
2. सुरेंद्र वर्मा – मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ–348
3. वही, पृष्ठ – 354
4. सुरेंद्र वर्मा–दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता,पृष्ठ–363
5. सुरेंद्र वर्मा–अंधेरे से परे, पृष्ठ – 55
6. वही, पृष्ठ – 92
7. वही, पृष्ठ – 126
8. सुरेंद्र वर्मा – मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ – 90
9. वही, पृष्ठ – 99
10. वही, पृष्ठ – 238
11. वही, पृष्ठ – 275-276

5.2.5.4 विवेच्य उपन्यासों मे प्रयुक्त शैली के विविध आयाम :-

शैली में रचनाकार का व्यक्तित्व झलकता है। कई विद्‌वानों ने शैली लेखक का अभिन्न अंग माना है। वर्मा जी ने अपने उपन्यासों की भाषा को अधिक रोचक, प्रवाहमयी एवं प्रभावकारी बनाने के लिए विभिन्न प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया है। शैली में बनावटीपन को स्थान नहीं। इसमें लेखक के चिन्तन और स्वाभाविक की सच्ची अभिव्यक्ति है। डॉ. भाऊसाहेब परदेशी तथा डॉ. शिवाजी देवरे इन दोनों के शैली के बारे में विचार हैं - ''कथाकार अपने विचार व्यक्त करने के लिए शैली का प्रयोग करता है लेकिन शैली का सम्बन्ध विचारों या अनुभूतियों की मात्र अभिव्यक्ति से नहीं है, बल्कि विषयवस्तु की पूर्ण प्रभावपूर्ण तथा औचित्यपूर्ण अभिव्यक्ति विषय एवं व्यक्तित्व प्रेरित वैशिष्ट्यों से युक्त अभिव्यक्ति से है।''[1] अत: स्पष्ट है कि उपन्यास लोकप्रिय होने में शैली की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। वर्मा जी के उपन्यासों में प्रयुक्त विभिन्न शैलियों को निम्न प्रकार से विभाजित किया जा सकता है -

5.2.5.4.1 आत्मकथात्मक शैली

विवेच्य उपन्यासों में आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग हुआ है, उसी को स्वकथात्मक कथन भी कहा हैं। जिसमें लेखक पात्रों की जीवनगाथा अपने कथन के द्‌वारा चित्रित करता हैं। इसके अन्तर्गत व्यक्ति का आत्मविश्लेषण किया जाता है। वर्मा जी ने आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग अपने उपन्यासों में 'अंधेरे से परे' उपन्यास का एक उदाहरण द्रष्टव्य हैं - ''सुबह जब नींद खुली, तो रोजाना की तरह सात के बजाय आठ बज चुके थे। पल भर को संतोष हुआ कि दिनचर्या में एक घंटा काटने का संकट अपने-आप मिट गया। अगर किसी तरह हर दिन ऐसा होता रहे, तो कितना अच्छा हो।''[2] उक्त कथन में गुल्लू के जीवन की घुटन और कुंठा का सूक्ष्म अंकन दिखाई देता है।

'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' में भोला अपनी आत्मकथा नील से कहता है - ''मथुरा से पचपन किलोमीटर दूर गाँव में मेरी थोडी-सी जमीन थी। पिता के देहांत के बाद काका अकेले खेती-बाड़ी सँभालने लगे। दो साल पहले पत्नी

---

1. डॉ.भाऊसाहेब परदेशी, डॉ. शिवाजी देवरे - राजेंद्र यादव का रचना संसार, पृष्ठ - 93
2. सुरेंद्र वर्मा - अंधेरे से परे, पृष्ठ - 23

मंगलो का पहले प्रसव में देहांत हो गया।''[1] अत: स्पष्ट है कि विवेच्य उपन्यासों के पात्र आत्मकथात्मक शैली का परिचय देते हैं।

5.2.5.4.2 संवाद शैली

संवाद शैली विशेष महत्त्वपूर्ण शैली होती है, क्योंकि चरित्र संवादों के माध्यम से पाठकों पर प्रभाव निर्माण करते हैं। कथोपकथन या संवाद शैली से एक ओर उपन्यास का कथासूत्र आगे बढ़ाता है तो दूसरी ओर पात्रों का चरित्रांकन होता है, साथ ही रोचकता भी बढ़ती है। वर्मा जी के उपन्यासों में इस शैली का पर्याप्त प्रयोग किया गया है। इसमें टेलिफोन संवादों का भी प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया है। विवेच्य उपन्यासकार की संवाद शैली का चुटीपालन निम्न उद्धरण में देखा जा सकता हैं। सोमू और गुल्लू में यह प्रश्नार्थक संवाद यहाँ द्रष्टव्य है -

''गुल्लू मामा।'

'हूँ ?'

'मम्मी कहां है ?'

क्षण भर ठरहकर कहा, 'अपने एक दोस्त के पास।

रात तक आ जाएगी।

'कौन ?'

'तुम जानते नहीं।'

'आदमी है ?'

...

सोमू तनिक ठहरा, 'मम्मी नहीं जाएगी ?'

'नहीं।''[2]

स्पष्ट है कि उक्त संवाद सहज, सुन्दर तथा रोचक दिखाई देते हैं। टेलिफोन संवाद का एक उदाहरण द्रष्टव्य है - ''खट-खट हुई, तो निगाह उठाई। नलिनी ने फोन की ओर इशारा किया।

---

1. सुरेंद्र वर्मा - दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता, पृष्ठ - 14-15
2. सुरेंद्र वर्मा - अंधेरे से परे, पृष्ठ - 179-180

उठा, रिसीवर थामा, 'गुलशन ...'

...

'तो चार बजे। रैंबिल में ...।'

'ठीक।"[1]

कहना सही होगा कि उक्त स्थान टेलीफोन पर हुए संवादों का दर्शन होता है। प्रस्तुत उपन्यास में टेलीफोन संवाद अधिक मात्रा में दृष्टिगोचर होते हैं।

'मुझे चाँद चाहिए' में वर्षा फिल्म में काम करने के लिए मुंबई जाती है तब हर्ष की तलाश करने के लिए नन्दा को फोन करती है। नंदा ने टेलीफोन पर कहा - "मैं आपका संदेश दे दूँगा। आप जहाँ ठहरी हैं, वहाँ का फोन नम्बर भी दे दीजिए।"[2] इसके बाद आदित्य और चारुश्री को टेलीफोन किया परन्तु हर्ष का पता नहीं लगा।

"वह दरवाज़े के नीचे पड़ा अखबार उठा रहा था कि फोन की घंटी बजी।

"मिस्टर माथुर ?" नारी-स्वर ने पूछा।

उसने नोट करते हुए कहा, "ठीक है।"[3]

अत: स्पष्ट है कि संवाद के साथ साथ टेलिफोन शैली के कारण विवेच्य उपन्यासों में कलात्मकता आयी है। संवाद शैली का चित्रण विवेच्य उपन्यासों मे ज्यादा मात्रा में लक्षित होते हैं।

5.2.5.4.3 भाषण शैली

जब नेता लोग अपने विचार जनता के सामने प्रकट करते हैं तो उसे भाषण कहा जाता है, जब यह भाषण उपन्यास में प्रयुक्त किया जाता है तब उसे भाषण शैली कहते है। 'अंधेरे से परे' उपन्यास में उपन्यासकार ने भाषण शैली का प्रयोग किया है। इसी उपन्यास का एक उदाहरण द्रष्टव्य है - राष्ट्रपति सभा में अपने देश वासियों को संबोधित करते हुए भाषण देते हैं -

---

1. सुरेंद्र वर्मा - अंधेरे से परे, पृष्ठ - 126
2. सुरेंद्र वर्मा - मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ - 323
3. सुरेंद्र वर्मा - दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता, पृष्ठ - 159

“मेरे प्रिय देशवासियों,

अपने देश की स्थितियों के बारे पहले भी मैंने व्हाइट हाउस से आपसे बातें की हैं। आज मैं आपसे कुछ भिन्न कहने जा रहा हूँ। मैं आपको एक निर्णय के बारे में बतलाने जा रहा हूँ, जो मैंने लिया है।

मैं जानता हूँ कि अपने राजनीतिक विचारों के बावजूद आप नये राष्ट्रपति को वही सद्भावना और सहयोग देंगे, जो आपने मुझे दिया है, क्योंकि अंवतोमत्वा महत्त्वपूर्ण राष्ट्रपति का पद है, व्यक्ति नहीं।

धन्यवाद ! शुभरात्रि और विदा !”[1]

अत: स्पष्ट है कि भाषण शैली का उपयोग लेखक ने बड़ी कुशलता से किया है।

5.2.5.4.4 डायरी शैली

अभिव्यक्ति का एक माध्यम डायरी शैली भी है। डायरी शैली पाश्चात्य विचारकों और लेखकों की प्रिय शैली रही है। उपन्यासकार ने कहीं-कहीं पात्रों की डायरी द्वारा अपनी कथावस्तु को आगे बढ़ाने और उनके मनोभावों को दर्शाने के लिए प्रयुक्त करता है तब उसे 'डायरी शैली' कहते हैं। उपन्यासकार स्वंय दूर हट जाता हैं और सारा उत्तरदायित्व संबंधित पात्रों पर छोड देता हैं। 'अंधेरे से परे' उपन्यास में पृष्ठ 40 से पृष्ठ 60 तक गुल्लू जीवन में उदासिनता का बखान करता हैं। डायरी शैली का उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य है – “9 मई अकेलापन कैसा सधन और ठोस है – बर्फ की तरह जमा हुआ। ...

तुलसी जा संसार में उत्तम खेती तब।
चाँदछाप की याद का नाम सुमरिनी जब।”[2]

उपर्युक्त डायरी शैली के द्वारा गुल्लू का अकेलापन स्पष्ट दिखाई देता है। उसका अकेलापन कभी न समाप्त होनेवाला है। इसका स्पष्टीकरण डायरी शैली के द्वारा किया है और डायरी को समारोप काव्यात्मक पंक्ति में किया है। अत:

---

1. सुरेंद्र वर्मा – अंधेरे से परे, पृष्ठ – 7–8
2. वही, पृष्ठ – 40–60

स्पष्ट है कि वर्मा जी ने प्रस्तुत उपन्यास में पात्रों के व्यक्तित्व का आन्तरिक पक्ष उभारने के लिए और कथानक को नया मोड़ देने के लिए डायरी शैली का प्रयोग किया है।

5.2.5.4.5 काव्यात्मक एवं गीति शैली

सुरेंद्र वर्मा जी ने अपने उपन्यासों में काव्यात्मक शैली का प्रयोग किया है। 'अंधेरे से परे' उपन्यास में भाषा कहीं-कहीं काव्यात्मक हो गयी है। गुल्लू सुबह, चाय की प्याली हाथ में लेकर कमरे में आता है तो उसके मुँह से यह काव्य पंक्तियाँ निकलती है -

''सुबह की चाय
तेरे बजाय
आदमी चाहे कुछ पाए
पर वो मजा नहीं आय !''[1]

कहना सही होगा कि उक्त कथन में काव्यात्मक शैली नजर आती है। प्रस्तुत उपन्यास में काव्यात्मक शैली का प्रयोग अधिक मात्रा में दिखाई देता है।

'मुझे चाँद चाहिए' में संस्थापक दिवस के अवसर पर स्वागत के वक्त यह कविता पढ़ी जाती थी। जो काव्यात्मक शैली का उदाहरण द्रष्टव्य है - ''जीवन में मिश्री धोल गये तुम मिश्रीलाल पालरवाले जड़ता के फाटक खोल गये तुम ज्ञान-जड़ी झालरवाले ...।''[2] उपर्युक्त उद्धरण काव्यात्मक शैली का परिचय देता है।

'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' में भोला शाहीनी मस्ज़िद के पास जाता है तो बाहर चबूतरे पर आठ-दस भिखारी अपने कटोरे लिये बैठे थें। एक भिश्ती छिड़काव कर रहा था। तब भिखारी निम्नांकित गीत गाता है।

''गुनहमारो चलो रहमत से अपनी झोलियाँ भर लो
अजल से आम है लुत्फ़े करीमाना मुहम्मद का
यही है आरजू मेरी यही दिल की तमन्ना है
कि दिखला दे खुदा एक बार काशाना मुम्मद का।''[3]

---

1. सुरेंद्र वर्मा - अंधेरे से परे, पृष्ठ - 24
2. सुरेंद्र वर्मा - मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ - 13
3. सुरेंद्र वर्मा - दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता, पृष्ठ - 193

इस तरह प्रस्तुत उपन्यास में काव्य शैली एवं गीति शैली के कई उदाहरण मिलते हैं। इससे उपन्यासों की कलात्मकता एवं रोचकता में वृध्दि हुई है।

5.2.5.4.6 पूर्वदीप्ति (फ्लैश बैक) शैली

पात्रों की स्मृति में कुछ घटनाओं को दिखाकर उसकी याद को ताजा करने के लिए फ्लैश बैक शैली अपनायी गई है। तात्कालिकता का भावबोध इससे कराया जाता है। अतीत में जीता हुआ पात्र न केवल उन भावनाओं और विचारों का विश्लेषण करता है बल्कि तत्काल सम्बन्धित परिस्थिति से जुड़ता जाता है। 'अंधेरे से परे' उपन्यास का गुल्लू बिगुल बजाने वाले बच्चे की स्वाभाविकता पर जित्तन को बताता है – "उन दिनों इतवार को कभी–कभी हमारे घर अनाथालय का बैंड आता था ... कुछ पलों की चुप्पी के बाद जित्तन असाहाय से मुस्काराए, 'यह बचपन भी क्या चीज है !"[1] प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता है कि वह बिगुल वाला बच्चा बिगुल बजाते समय उसके चेहरे पर आक्रामक क्रूरता का भाव दिखाई देता है। उसे कुछ देते है तो ऐसे लेते है जैसे सूदखोर पठान माहवारी किस्त वसूल कर रहा हो। इसका प्रस्तुतिकरण लेखक ने फ्लैश बैक पद्धति से किया है।

'मुझे चाँद चाहिए' में वर्षा द्वारा हर्ष के साथ मिट्टू को कॉफी का प्याला देते समय शर्म आती है, कारण पिछली रात उसे आलिंगन देकर मिट्टू द्वारा चूमने की उसे याद आती है। मिट्टू वर्षा को चूमते हुए कहता है – "मैं तुम्हें लेकर संजीदा हो रहा हूँ।"[2] कहना आवश्यक नहीं कि उक्त इसका कथन पूर्वदीप्ति (फ्लैश बैक) शैली का उदाहरण है।

5.2.5.4.7 वर्णनात्मक शैली

वर्णनात्मक शैली सर्वाधिक प्रचलित और सुविधा जनक शैली है। उपन्यासकार तटस्थ भाव से तटस्थ व्यक्ति की तरह पात्र चरित्र तथा घटनाओं आदि का वर्णन करता है। प्रस्तुत शैली के द्वारा उपन्यासकार को अधिक स्वतंत्रता रहती है। विवेच्य उपन्यासों में कई पृष्ठों तक यह शैली प्रवाहित रही है, जैसे – 'अंधेरे से

---

1. सुरेंद्र वर्मा – अंधेरे से परे, पृष्ठ – 30-31
2. सुरेंद्र वर्मा – मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ – 223

परे' उपन्यास में जब गुल्लू लाइब्ररी जाता है तब एक युवती किताब सामने लिए हुए बैठी थी – उसका वर्णन लेखक ने इस तरह किया है – "हथेली, पर चिबुक टिकाए एकटक देख जरूर नहीं है पृष्ठ की ओर, पर उस दृष्टि में विषय की तन्मयता नहीं, ध्यान कहीं और चले जाने का साक्ष है और पन्ना भी देर से पलटा नहीं गया है।"[1] इसके साथ-साथ एक्सीडेंट का वर्णन, दिल्ली की भीड़भाड़ का, लाइब्ररी में चालीस वर्ष के आसपास की महिला का, तेज हवा का, बिगुल बजाने वाले बच्चा का, कमरे का, बरसात का, पार्टी में नाच-गाने का, क्रिसमस और नए साल के उत्साह का, गुलाब (बंदर) का, गुल्लू के परिवार का वर्णन भी वर्णनात्मक शैली का श्रेष्ठ प्रकार परिलक्षित होता है।

'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास में वर्षा के कट्टर पंथीय परिवार का, मिश्रीलाल डिग्री कॉलेज का, दिल्ली का रिपर्टरी का, सतवंती की पारिवारिक स्थिति का, चतुर्भुज और उसके पत्नी के बीच तनाव आदि का वर्णन आया है। इसका उदाहरण द्रष्टव्य है – चतुर्भुज की पत्नी कहती है – " मेरे तथाकथित आकर्षण के पीछे चतुर्भुज के आम आदमी होने का तथ्य था, जिसके आस-पास मेरी रंगमंचीय गतिविधियाँ केन्द्रित थीं। मैंने अपने वैचारिक सरोकार को ज्यादा ही खींच लिया।"[2] यहाँ अनुपमा के तनाव का वर्णन है। इसके साथ हर्ष के दिल्ली के घर का, वर्षा के फार्म हाउस का, वर्षा-हर्ष के प्रणय प्रसंगों का वर्णन वर्णनात्मक शैली में लेखक ने किया है।

निष्कर्षत: कहना होगा कि सुरेंद्र वर्मा जी ने अपने उपन्यासों के सृजन के लिए अनेक भाषा और शैलियों का यथोचित प्रयोग किया है। वर्मा जी भाषा और शैली के कारन अपने समकालीन साहित्यकारों में अपना अलग स्थान बनाए रखते हैं।

5.2.6 उद्देश्य –

उपन्यास के कलारूप के विकास के साथ साथ उद्देश्य तत्त्व का महत्त्व भी बढ़ता रहा है। उपन्यास के विषय क्षेत्र के विकास के साथ उसके लक्ष्य में भी विविधता का दर्शन होता है। आज का उपन्यासकार ऐतिहासिक, सामाजिक,

---

1. सुरेंद्र वर्मा – अंधेरे से परे, पृष्ठ – 6
2. सुरेंद्र वर्मा – मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ – 309

राजनीतिक, सांस्कृतिक अथवा पूर्णत: काल्पनिक किसी भी प्रकार की रचना किसी-न-किसी उद्देश्य से ही करता हैं। अत: उपन्यास के उद्देश्य की परिधि विस्तृत हो चली है। हर रचनाकार की कलाकृति उसकी अभिव्यक्ति होती है साथ ही मानव जीवन में उसका महत्त्व और उपयोगिता भी होती है। वर्तमान युग में उपन्यासों का उद्देश्य मनुष्य जीवन की व्याख्या करना, यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में मनुष्य-जीवन के उदात्त पक्ष का निर्देश देना, उसके विविध पक्षों का मूल्यांकन करना, मानवतावादी जीवन दर्शन का अंकन करना आदि माने जाते हैं। इस दृष्टि से विवेच्य उपन्यासों का उद्देश्य सफल परिलक्षित होता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है - ''प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्राय: सभी उपन्यासों की रचना के पीछे कोई-न-कोई उद्देश्य या जीवन के प्रति विशिष्ट दृष्टिकोण मिलता है।''[1] अत: स्पष्ट होता है कि उपन्यास की सफलता ज्यादातर उसके उद्देश्य पर ही निर्भर होती है। पाठकों के स्तर और रूचि के अनुसार उपन्यास के स्वरूप में भी क्रमश: उद्देश्यगत परिवर्तन होता जा रहा है। विवेच्य उपन्यासों का मुख्य उद्देश्य महानगरीय जीवन तथा नारी-जीवन की व्याख्या करना रहा है। उपन्यासों में कथानक, पात्र एवं विषय चयन लेखक के जीवन दर्शन से ही प्रभावित होते हैं, अतएव रचना में जीवन दर्शन या लेखकीय उद्देश्य का सर्वमान्य महत्त्व होता है। सुरेंद्र वर्मा जी ने जो देखा है, परखा है उसे ही अपने विचार के द्वारा व्यक्त किया है।

सुरेंद्र वर्मा के 'अंधेरे से परे' उपन्यास में अनेकविध उद्देश्यों का समावेश हुआ है। जित्तन बिंदो जैसे पति-पत्नी के दाम्पत्य-जीवन के तनावों का चित्रण करना, दिल्ली की भिड़भाड़ का, आज के युवकों की बढ़ती उदासिनता, संत्रास, कुंठित विचार का, नारी अधिकार के प्रति सज़गता का, स्त्री-पुरुष अंतर की मानसिकता को उजागर करना, विवाहपूर्व यौन संबंध, स्त्रियों का यौन संबंधों के प्रति बढ़ता आकर्षण, नौकरीपेशा नारी, महानगर में बढ़ता अकेलापन , माँ-बाप के अपनी व्यस्तता के कारण बच्चों के प्रति दुर्व्यवहार आदि प्रधान तथा गौण उद्देश्यों को प्रस्तुत उपन्यास में स्पष्ट किया है।

---

1. डॉ. प्रतापनारायण टंडन - हिंदी उपन्यास कला, पृष्ठ - 341

'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास में स्वतंत्र अस्तित्व की पहचान बनाने के पीछे पड़ी नारी के कारण महानगर में बढ़ता हुआ मूल्य विघटन, कलाकारों का अपनी इच्छा, आकांक्षा की पूर्ति के लिए किया जीवन-संघर्ष, दो पीढ़ियों के बीच संघर्ष, कैरियर के पीछे लगी कलाकार नारियों का अविवाहित रहना, अकेलेपन के संत्रास पर प्रकाश डालना, वैध-अवैध गर्भ गिराने की स्थिति पर सोचना, फिल्मी कलाकारों के प्रेम-सम्बन्ध कलाकारों के दाम्पत्य-जीवन में उभरने वाले तनावों को उजागर करना, फिल्मी युवक-युवतियों का उन्मुक्त जीवन, स्वच्छंदी मनोवृत्ति, समलैगिंक संबंध प्रेम तथा सेक्स का खुलापन, कैरियर में अपनी इच्छापूर्ति न होने के कारण कलाकरों की आत्महत्याएँ फिल्म और नाटक में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री और अभिनेता बनने के लिए किया परिवार का त्याग, कलाकारों की जिन्दगी में उत्पन्न रुकावटों, विवाहपूर्व गर्भवती होना और उससे प्राप्त संतान की स्वीकृति आदि प्रमुख तथा गौण उद्देश्यों की पहल की है। हिन्दी साहित्य में 'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास को मील का पत्थर कहा जाता है।

'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' में अर्थप्राप्ति हेतु कुछ भी काम करने के लिए तैयार होना, पुरुष-वेश्या इस नयी संकल्पना पर चिंतन करना, महानगरों में चल रहा अवैध यौन-संबंध, पुलिस भ्रष्टाचार, नशापान, गैंगवार आदि के कारण महानगर में बिगड़े समाज का चित्रण करना, उपभोक्तावादी संस्कृति का योगदान स्पष्ट करना आदि कई उद्देश्यों की पहल की गई है। इस प्रकार वर्मा जी के उपन्यासों में जन-जीवन से संबंधित अनेक प्रधान तथा गौण उद्देश्यों की पूर्ति की है। साथ ही युवा पीढ़ी की भटकन को सही राह दिखाकर स्वच्छंद जीवन जीने के लिए प्रेरित करना विवेच्य उपन्यास का प्रधान उद्देश्य मानना होगा।

निष्कर्ष :

सुरेंद्र वर्मा के उपन्यासों का शिल्पगत अध्ययन का मूल्यांकन करने के उपरांत जो तथ्य सामने आए हैं, वे इस प्रकार हैं -

सुरेंद्र वर्मा ने अपने उपन्यासों में सरस, सहज अभिव्यक्ति, विचारों के

द्वारा शिल्प की विविधता चित्रित की है। विवेच्य उपन्यास की कथावस्तु का आरंभ वर्णनात्मक, घटनात्मक, आत्मकथात्मक शैली द्वारा हुआ है। प्रस्तुत उपन्यास के विकास में नारी जीवन के विभिन्न अंगों की चर्चा की है।

चरित्र चित्रण में उनके उपन्यासों के पात्र युगीन परिवेश को चित्रित करते हैं। ये पात्र समाज के अलग-अलग वर्गों से आए हैं। प्रधान पात्र और गौण पात्रों में उच्चवर्ग, मध्यवर्ग, निम्नवर्ग के पात्रों का चरित्र-चित्रण कर उनकी विशेषताओं को चित्रित किया है।

कथोपकथन से कथावस्तु का विकास तो हुआ ही है साथ ही चरित्रों की व्याख्या भी हुई है। कथोपकथन के द्वारा सुरेंद्र वर्मा ने देशकाल वातावरण का निर्वाह किया है। विवेच्य उपन्यासों के संवाद स्वाभाविक, मार्मिक, भावात्मक तथा छोटे-छोटे होकर भी सारपूर्ण और अर्थगर्भित है।

देशकाल वातावरण में सामाजिक, महानगरीय, आर्थिक, प्राकृतिक वातावरण चित्रण मिलता है। साथ ही विवेच्य उपन्यासों के देशकाल वातावरण में संक्षिप्तता, वास्तविकता, चित्रात्मकता, वर्णन की सूक्ष्मता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। अत: कहा जा सकता है कि वातावरण की सभी विशेषताएँ विवेच्य उपन्यासों में दिखाई देती है। वर्मा जी के उपन्यासों का उद्देश्य सामाजिक, आर्थिक विषमता को नष्ट करना रहा है।

सुरेंद्र वर्मा के उपन्यासों की भाषा शैली का अवलोकन करने पर यह विदित होता है कि वर्मा जी ने बोलचाल की भाषा, चित्रात्मक भाषा, प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग किया है। शब्दयोजना में संस्कृत, अरबी, फारसी, अंग्रेजी, द्विरुक्त, जोड़े के साथ आये हुए सादृश्य शब्द, ध्वन्यार्थक शब्दों का प्रयोग किया है। वाक्य विन्यास में डॉट वाले अंश, छोटे-छोटे वाक्य, अंग्रेजी-हिंदी वाक्य और अंग्रेजी वाक्यों का भी समावेश किया है। जिसके कारण विवेच्य उपन्यासों में प्रभावात्मकता तथा कलात्मकता दृष्टिगोचर होती है।

- -

शैली का संबंध लेखक की रुचि विशेष से है। वह किस उपन्यास को किस शैली में व्यक्त करना चाहता है। यह उपन्यास के कथ्य और लेखक की दृष्टि पर निर्भर करता है। सुरेंद्र वर्मा जी ने अपने उपन्यासों को विविध शैलियों में चित्रित किया है। उनके उपन्यासों में आत्मकथात्मक, संवाद, भाषण, डायरी, काव्यात्मक एवं गीति, पूर्वदीप्ति और वर्णनात्मक आदि शैलियों का प्रयोग कलात्मक रूप से लक्षित होता है। इस प्रकार सुरेंद्र वर्मा भाषा और शैली के कारण अपने समकालीन साहित्यकारों में अपना अलग स्थान बनाया है।

समग्र रूप से अवलोकन करने पर विदित होता है कि सुरेंद्र वर्मा के उपन्यासों की संवेदना पाठक में मन-मस्तिष्क में पर्याप्त असर छोड़ देती है। अपने उपन्यासकार के रूप में शिल्प, भाषा और कथ्य के स्तर में कई नये संदर्भ उद्घाटित किये हैं। हिंदी उपन्यास में संवेदना एवं शिल्प की दृष्टि से विवेच्य उपन्यास पूर्णतः सफल दिखाई देते हैं।

□□□□